नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 135
दि. 17.02.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

भूपेन बोरा का यू-टर्न: असम कांग्रेस में उठते सवाल और राजनीतिक हलचल

(जीएनएस)। गुवाहाटी। असम की राजनीति में आज एक बड़ा उलटफेर देखने को मिला जब कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष भूपेन कुमार बोरा ने इस्तीफा देने के कुछ ही घंटों के भीतर अपना फैसला वापस ले लिया। दिन की शुरुआत में इस्तीफा और शाम तक उसकी वापसी ने राजनीतिक हलकों में हलचल पैदा कर दी। इस पूरे घटनाक्रम को असम कांग्रेस के भीतर चल रही खींचतान और नेतृत्व स्तर पर सक्रियता से जोड़कर देखा जा रहा है।

भूपेन बोरा ने अपना इस्तीफा कांग्रेस अध्यक्ष पल्लव बिहारी खरगे को भेजा था। इस्तीफे में उन्होंने खुद को नजरअंदाज किए जाने और पार्टी में पर्याप्त सम्मान न मिलने की बात उठाई थी। इस्तीफे की खबर आने के तुरंत बाद ही राजनीतिक गलियारों में चर्चा फैल गई और वरिष्ठ नेताओं ने इस स्थिति को संभालने के लिए तुरंत कदम उठाए।

हालांकि, थोड़ी ही देर बाद कांग्रेस के राज्य प्रभारी जितेंद्र सिंह ने बयान दिया कि पार्टी हाईकमान के हस्तक्षेप के बाद बोरा ने इस्तीफा वापस लेने का फैसला किया। कई दौर की बैठकें और समझाइश के बाद यह यू-टर्न हुआ। पार्टी सूत्रों के अनुसार बोरा को संगठन में अहम जिम्मेदारी देने का भरोसा दिया गया, जिससे उनके असंतोष को दूर करने का प्रयास किया गया।

इस्तीफे की खबर सामने आते ही गुवाहाटी स्थित बोरा के आवास पर कांग्रेस नेताओं का तांता लग गया। प्रदेश अध्यक्ष गौरव गोगोई समेत कई वरिष्ठ नेता और सहयोगी दलों के प्रतिनिधि उनसे मिलने पहुंचे। पूरे दिन बैठकें चलीं और बोरा को आश्वासन दिया गया कि उन्हें संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका दी जाएगी। इसके बाद उन्होंने साफ किया कि वह पार्टी में बने रहेंगे और संगठन के लिए काम जारी रखेंगे। इस तेज घटनाक्रम ने यह संकेत दिया कि कांग्रेस टूट की स्थिति से बचने के लिए सक्रिय रही। इस घटनाक्रम पर असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि भूपेन बोरा का इस्तीफा पार्टी की अंदरूनी हालत का

प्रतीक है। सरमा ने यह भी कहा कि बोरा कांग्रेस के ऐसे आखिरी बड़े हिंदू नेता थे जो न विधायक थे, न मंत्री। उनके अनुसार, कांग्रेस में आम परिवार से आने वाले नेता आगे नहीं बढ़ पाते, और यही कारण है कि संगठन में असंतोष फैल रहा है। मुख्यमंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि बोरा ने भाजपा में शामिल होने के लिए उनसे संपर्क नहीं किया। भूपेन बोरा का इस्तीफा और फिर वापसी असम कांग्रेस के अंदरूनी सियासी गतिशीलता को उजागर करता है। 2021 से 2025 तक प्रदेश अध्यक्ष रहे बोरा को संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने का श्रेय दिया जाता है। उनके इस्तीफे से पार्टी के भीतर असंतोष की झलक तो मिली, लेकिन वापसी से फिलहाल टूट को टाला गया। राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि यह घटनाक्रम विधानसभा चुनावों से पहले कांग्रेस के लिए एक चेतावनी भी है कि संगठन के भीतर संतुलन बनाए रखना कितना चुनौतीपूर्ण है।

कांग्रेस खेमे का कहना है कि संगठन एकजुट है और सभी नेता पार्टी की मजबूती के लिए काम कर रहे हैं। हालांकि, मुख्यमंत्री सरमा का दावा है कि आने वाले समय में कांग्रेस के कुछ विधायक पार्टी छोड़ सकते हैं। यह घटनाक्रम असम की सियासत में आगामी विधानसभा चुनाव से पहले बड़े राजनीतिक संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

भूपेन बोरा ने अपने इस्तीफे में पार्टी नेतृत्व को यह संदेश दिया कि उन्हें संगठन में उचित सम्मान और निर्णय प्रक्रिया में भूमिका नहीं दी जा रही है। यह सवाल उठता है कि असम कांग्रेस के भीतर युवा और अनुभवी नेताओं के बीच सन्तुलन कैसे बनाए रखा जाएगा। पार्टी के भीतर यह घटनाक्रम असंतोष और नेतृत्व स्तर पर रणनीतिक सक्रियता का प्रतीक माना जा रहा है।

इस पूरे मामले ने असम की राजनीति में तनाव और सियासी हलचल को बढ़ा दिया है। भाजपा खेमे ने इसका राजनीतिक फायदा उठाने की कोशिश की, जबकि कांग्रेस ने इसे संगठनात्मक समझाइश और नेतृत्व की सक्रियता के रूप में प्रस्तुत किया। इस घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि असम की राजनीति में सत्ता और संगठन के भीतर संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण है, खासकर विधानसभा चुनाव से पहले।

भूपेन बोरा का यू-टर्न यह भी दर्शाता है कि पार्टी हाईकमान और स्थानीय नेतृत्व के बीच समन्वय बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है। इससे यह संदेश भी गया कि असंतोष के बावजूद पार्टी टूट की स्थिति से बच सकती है यदि सही समय पर संवाद और समझाइश की जाती है।

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि आगामी चुनावों से पहले ऐसी घटनाएं पार्टियों के रणनीतिक फैसलों को प्रभावित कर सकती हैं। यह न केवल संगठनात्मक स्थिरता के लिए चुनौती है बल्कि चुनावी तैयारियों और उम्मीदवार चयन पर भी असर डाल सकती है। असम कांग्रेस के लिए यह घटनाक्रम इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह राज्य में पार्टी की लोकप्रियता और नेतृत्व के प्रभाव को सीधे प्रभावित करता है।

इस पूरे घटनाक्रम ने यह साफ कर दिया कि राजनीतिक स्थिरता और नेतृत्व में संतुलन बनाए रखना किसी भी पार्टी के लिए बेहद जरूरी है। भूपेन बोरा की इस्तीफा और वापसी ने असम की राजनीति में चर्चा का नया दौर शुरू कर दिया है, और सभी की निगाहें अब आगामी चुनाव और पार्टी के अंदरूनी संतुलन पर हैं।

सनापुर कांड में इंसाफ की गूंज, इस्राइली महिला से सामूहिक दुष्कर्म के दोषियों को मौत की सजा

(जीएनएस)। कर्नाटक के कोप्पल जिले के सनापुर में हुए जघन्य अपराध के मामले में अदालत का फैसला न्याय व्यवस्था की दृढ़ता और पीड़ितों के अधिकारों की रक्षा का एक महत्वपूर्ण उदाहरण बनकर सामने आया है। इस मामले ने न केवल पूरे देश को झकझोर दिया था, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत की कानून व्यवस्था और पर्यटकों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े किए थे। अब अदालत द्वारा तीन दोषियों को मौत की सजा सुनाए जाने के बाद यह संदेश स्पष्ट रूप से सामने आया है कि ऐसे अमानवीय अपराधों के लिए न्याय प्रणाली किसी भी प्रकार की नरमी नहीं बरतेगी।

यह घटना 6 मार्च 2025 की रात को सनापुर इलाके में हुई थी, जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यटन स्थलों के लिए जाना जाता है। उस रात कुछ पर्यटक, जिनमें एक इस्राइली महिला, अमेरिका के एक पर्यटक, महाराष्ट्र और ओडिशा के दो युवक और एक होमस्टे संचालक शामिल थे, तारों को देखने के लिए तुंगभद्रा नहर के पास गए थे। यह एक शांत और सामान्य पर्यटन गतिविधि थी, लेकिन अचानक वहां तीन आरोपियों का पहुंचना और उनके द्वारा किए गए हिंसक कृत्य ने इस रात को भयावह बना दिया।

अभियोजन पक्ष के अनुसार, आरोपी मोटरसाइकिल पर वहां पहुंचे और पैसों को लेकर विवाद शुरू कर दिया। विवाद जल्द ही हिंसा में बदल गया और आरोपियों ने तीनों पुरुष पर्यटकों को नहर में धक्का दे दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने उन पर पत्थर भी फेंके ताकि वे बाहर न निकल सकें। इस दौरान ओडिशा के बिभास कुमार की डूबने से मृत्यु हो गई, जबकि अन्य दो पर्यटक किसी तरह अपनी जान बचाने में सफल रहे। यह घटना न केवल हत्या का मामला थी, बल्कि इसके साथ-साथ आरोपियों ने महिला पर्यटकों के साथ सामूहिक दुष्कर्म और लूटपाट जैसी घिनौनी वारदात को भी अंजाम दिया।

इस्राइली महिला और होमस्टे संचालक महिला के साथ आरोपियों ने सामूहिक दुष्कर्म किया और इसके बाद उनका मोबाइल फोन, नकदी और कैमरा लूटकर फरार हो गए। यह अपराध केवल एक व्यक्ति के खिलाफ नहीं था, बल्कि यह मानवता के खिलाफ एक गंभीर हमला था, जिसने समाज की संवेदनशीलता और सुरक्षा व्यवस्था को चुनौती दी। इस घटना के बाद पुलिस ने तेजी से कार्रवाई करते हुए आरोपियों को गिरफ्तार किया और उनके खिलाफ मजबूत साक्ष्य एकत्र किए।

गंगावती की सिविल अदालत ने इस मामले की सुनवाई के दौरान सभी साक्ष्यों और गवाहों के बयान का गहन विश्लेषण किया। अदालत ने पाया कि आरोपी मल्लेश उर्फ हांडी मल्ला, शरणबसवा और चैतन्य साई इस अपराध में पूरी तरह दोषी हैं। अदालत ने उन्हें हत्या, सामूहिक दुष्कर्म, हत्या की कोशिश, लूट और जबरन वसूली जैसे गंभीर अपराधों का दोषी ठहराया। अदालत ने 7 फरवरी को उन्हें दोषी घोषित किया था और 16 फरवरी को सजा सुनाते हुए उन्हें मौत की सजा देने का फैसला किया।

अदालत का यह फैसला भारतीय न्याय प्रणाली की उस सख्ती को दर्शाता है, जो समाज में कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक है। अदालत ने हत्या के लिए भारतीय न्याय संहिता की धारा 103 के तहत फांसी की सजा सुनाई, जबकि सामूहिक दुष्कर्म के लिए दोषियों को जीवन के अंतिम क्षण तक कारावास की सजा भी दी गई। यह सजा न केवल दोषियों को उनके अपराध की गंभीरता का एहसास कराती है, बल्कि समाज में यह संदेश भी देती है कि ऐसे अपराधों के लिए कोई स्थान नहीं है।

इस फैसले का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों के लिए सुरक्षा और न्याय का भरोसा बढ़ाता है। भारत एक ऐसा देश है, जहां हर साल लाखों विदेशी पर्यटक आते हैं और यहां की संस्कृति, इतिहास और प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेते हैं। ऐसे में इस प्रकार की घटनाएं न केवल पीड़ितों के लिए, बल्कि देश की छवि के लिए भी हानिकारक होती हैं। अदालत का यह फैसला यह दर्शाता है कि भारत की न्याय प्रणाली विदेशी नागरिकों के अधिकारों और सुरक्षा के प्रति भी उतनी ही संवेदनशील है जितनी अपने नागरिकों के लिए।

इस मामले ने कानून प्रवर्तन एजेंसियों की भूमिका और उनकी तत्परता को भी उजागर किया है। पुलिस और जांच एजेंसियों ने तेजी से कार्रवाई करते हुए आरोपियों को गिरफ्तार किया और अदालत में मजबूत साक्ष्य प्रस्तुत किए। यह दर्शाता है कि जब कानून प्रवर्तन एजेंसियां अपने कर्तव्यों का सही तरीके से पालन करती हैं, तो न्याय सुनिश्चित किया जा सकता है।

हालांकि अदालत ने दोषियों को मौत की सजा सुनाई है, लेकिन भारतीय कानून के अनुसार उन्हें ऊपरी अदालत में अपील करने का अधिकार भी प्राप्त है। यह न्याय प्रणाली की उस पारदर्शिता और निष्पक्षता को दर्शाता है, जिसमें हर आरोपी को अपने बचाव का पूरा अवसर दिया जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि न्याय केवल कठोर ही नहीं, बल्कि निष्पक्ष और संतुलित भी हो।

इस घटना ने समाज में महिलाओं की सुरक्षा और पर्यटकों की सुरक्षा को लेकर गंभीर चर्चा को जन्म दिया है। यह आवश्यक है कि सरकार और संबंधित एजेंसियां ऐसे कदम उठाएं, जिससे इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करना, पुलिस की गश्त बढ़ाना और अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं।

भगोड़े आर्थिक अपराध पर कसा शिकंजा: संजय भंडारी की संपत्तियों की जब्ती पर 28 फरवरी को अहम फैसला

(जीएनएस)। नई दिल्ली में आर्थिक अपराधों के खिलाफ चल रही कानूनी कार्रवाई के तहत हथियार डीलर संजय भंडारी से जुड़े मामले में एक महत्वपूर्ण मोड़ सामने आया है। राजधानी की राउज एवेन्यू कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की उस याचिका पर फैसला 28 फरवरी तक के लिए टाल दिया है, जिसमें भंडारी की संपत्तियों को जब्त करने की मांग की गई है। यह मामला केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत में आर्थिक अपराधों के खिलाफ सरकार और जांच एजेंसियों की बढ़ती सख्ती और न्यायिक प्रक्रिया की गंभीरता को भी दर्शाता है।

विशेष जज संजय जिंदल की अदालत में इस मामले की सुनवाई चल रही है। अदालत ने पहले 31 जनवरी को इस याचिका पर अपना आदेश सुरक्षित रख लिया था, लेकिन फैसला तैयार न होने के कारण इसे स्थगित कर दिया गया। अब 28 फरवरी को अदालत इस मामले में अपना अंतिम निर्णय सुनाएगी, जिसका प्रभाव न केवल इस मामले पर बल्कि भविष्य में आर्थिक अपराधों से जुड़े अन्य मामलों पर भी पड़ सकता है।

प्रवर्तन निदेशालय ने अदालत को बताया है कि संजय भंडारी को पहले ही भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया जा चुका है और अब उनकी संपत्तियों को जब्त करने की प्रक्रिया शुरू की जानी है। एजेंसी के अनुसार, यह कदम केवल सजा देने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए भी है कि आरोपी कानून की पकड़ से बचकर अपनी अवैध संपत्ति का लाभ न उठा सके। यह कार्रवाई भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम के तहत की जा रही है, जो उन लोगों के खिलाफ सख्त प्रावधान प्रदान करता है जो आर्थिक अपराध करके देश छोड़ देते हैं और न्यायिक प्रक्रिया से बचने की कोशिश करते हैं।

इस मामले की गंभीरता इस बात से भी स्पष्ट होती है कि संजय भंडारी की संपत्तियां केवल भारत तक सीमित नहीं हैं, बल्कि विदेशों में भी फैली हुई हैं। ईडी ने अदालत को बताया कि उनकी संपत्तियों की सूची में भारत के अलावा दुबई और ब्रिटेन में स्थित संपत्तियां भी शामिल हैं। इन संपत्तियों की जब्ती के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कानूनी प्रक्रिया और आवश्यक पत्राचार किया जाएगा। यह दर्शाता है कि आर्थिक अपराधों की जांच अब केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह एक वैश्विक प्रक्रिया बन चुकी है, जिसमें विभिन्न देशों की एजेंसियों के बीच सहयोग आवश्यक हो गया है।

संजय भंडारी को पांच जुलाई 2025 को विशेष अदालत द्वारा भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया गया था। यह निर्णय तब लिया गया जब यह स्पष्ट हो गया कि वह जांच और कानूनी प्रक्रिया से बचने के लिए देश छोड़ चुके हैं और अदालत के समक्ष उपस्थित नहीं हो रहे हैं। भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किए जाने के बाद कानून के तहत उनकी संपत्तियों को जब्त करने का रास्ता साफ हो जाता है। इस कानून का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आरोपी अपनी अवैध संपत्ति का उपयोग न कर सके और उसे न्याय के कटघरे में लाया जा सके।

यह मामला कथित तौर पर आयकर प्रकरण से जुड़ा हुआ है, जिसमें संजय भंडारी पर 100 करोड़ रुपये से अधिक की अघोषित विदेशी संपत्तियों का आरोप है। जांच एजेंसियों का मानना है कि यह संपत्तियां अवैध रूप से अर्जित की गई थीं और उन्हें छिपाने के लिए विदेशी देशों में निवेश किया गया। इस तरह के मामलों में संपत्तियों की जब्ती एक महत्वपूर्ण कदम होता है, क्योंकि इससे आरोपी की आर्थिक शक्ति को कमजोर किया जा सकता है और उसे न्यायिक प्रक्रिया का सामना करने के लिए मजबूर किया जा सकता है।

आर्थिक अपराधों के खिलाफ इस तरह की कार्रवाई यह भी दर्शाती है कि सरकार और जांच एजेंसियां अब ऐसे मामलों को लेकर अधिक सतर्क और सक्रिय हो गई हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत में कई बड़े आर्थिक अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई की गई है, जिनमें उनकी संपत्तियों की जब्ती और उन्हें भगोड़ा घोषित करने जैसे कदम शामिल हैं। इन कार्रवाइयों का उद्देश्य न केवल अपराधियों को सजा देना है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि भविष्य में ऐसे अपराधों को रोका जा सके।

तेलंगाना की राजनीति में नया अध्याय, करीमनगर में भाजपा की ऐतिहासिक जीत

(जीएनएस)। तेलंगाना की राजनीतिक तस्वीर में एक महत्वपूर्ण बदलाव सामने आया है, जहां करीमनगर नगर निगम में भारतीय जनता पार्टी ने महापौर और उप महापौर दोनों पदों पर जीत हासिल कर एक नया राजनीतिक इतिहास रच दिया है। यह जीत केवल एक नगर निगम चुनाव की सफलता नहीं है, बल्कि यह उस राजनीतिक परिवर्तन का संकेत है जो राज्य की राजनीति में धीरे-धीरे आकार ले रहा है। भाजपा के पार्षद कोलागनी श्रीनिवास को महापौर और वाई सुनील राव को उप महापौर चुना जाना पार्टी के लिए एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है।

करीमनगर, जो तेलंगाना के प्रमुख शहरों में से एक है, लंबे समय से क्षेत्रीय दलों का गढ़ माना जाता रहा है। ऐसे में भाजपा की यह जीत राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। नगर निगम के कुल 66 वार्डों में से भाजपा ने 30 वार्ड जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में अपनी स्थिति मजबूत की। यह परिणाम न केवल पार्टी की संगठनात्मक शक्ति को दर्शाता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि जनता के बीच भाजपा का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। इस चुनाव में अन्य दलों का प्रदर्शन भी उल्लेखनीय रहा, लेकिन वे भाजपा की बढ़त को चुनौती नहीं दे सके। कांग्रेस ने 14 वार्डों में जीत हासिल की, जबकि भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) को 9 वार्डों में सफलता मिली। इसके अलावा ऑल इंडिया मजलिस ए इत्तेहादुल मुस्लिमीन और ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक ने 3-3 वार्डों में जीत दर्ज की, जबकि 7 वार्डों में निर्दलीय उम्मीदवार विजयी हुए। इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि चुनाव में बहुदलीय प्रतिस्पर्धा थी, लेकिन भाजपा ने सबसे अधिक समर्थन प्राप्त कर अपनी राजनीतिक बढ़त साबित की।

भाजपा की तेलंगाना इकाई के अध्यक्ष एन रामचंद्र राव ने इस जीत को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि यह केवल एक राजनीतिक सफलता नहीं है, बल्कि यह जनता के विश्वास और समर्थन का प्रतीक है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपने संदेश में कहा कि भाजपा करीमनगर को विकसित तेलंगाना और विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। उनका यह बयान इस बात का संकेत देता है कि पार्टी अब स्थानीय स्तर पर विकास और प्रशासन को अपनी प्राथमिकता बनाएगी।

करीमनगर नगर निगम में भाजपा की यह जीत कई कारणों से महत्वपूर्ण है। पहला, यह पार्टी की संगठनात्मक क्षमता और चुनावी रणनीति की सफलता को दर्शाती है। दूसरा, यह तेलंगाना जैसे राज्य में भाजपा के बढ़ते प्रभाव का प्रमाण है, जहां क्षेत्रीय दलों का लंबे समय से प्रभुत्व रहा है। तीसरा, यह परिणाम आने वाले विधानसभा और लोकसभा चुनावों के लिए भी महत्वपूर्ण संकेत दे सकता है।

इस जीत के पीछे केंद्रीय गृह राज्य मंत्री बंडी संजय कुमार की भूमिका को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। वह करीमनगर लोकसभा क्षेत्र से सांसद हैं और उन्होंने क्षेत्र में पार्टी संगठन को मजबूत करने के लिए लगातार प्रयास किए हैं। उनके नेतृत्व और सक्रियता ने पार्टी को जमीनी स्तर पर मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

करीमनगर नगर निगम में भाजपा के सत्ता में आने से शहर के विकास को लेकर नई उम्मीदें जगी हैं। नगर निगम का प्रशासन शहर की बुनियादी सुविधाओं, स्वच्छता, सड़क निर्माण, जल आपूर्ति और अन्य नागरिक सेवाओं के लिए जिम्मेदार होता है। ऐसे में भाजपा के नेतृत्व में नगर निगम के कार्यों में तेजी आने की उम्मीद की जा रही है। पार्टी ने पहले ही यह स्पष्ट कर दिया है कि उसका लक्ष्य करीमनगर को एक आधुनिक और विकसित शहर के रूप में स्थापित करना है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह जीत केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि इसका प्रभाव राज्य और राष्ट्रीय राजनीति पर भी पड़ सकता है।

आरोप, जांच और कानून के बीच खड़े राहुल ममकूटाथिल की परीक्षा

(जीएनएस)। केरल की राजनीति में इन दिनों एक ऐसा घटनाक्रम सामने आया है जिसने न केवल राजनीतिक हलकों में बल्कि समाज के हर वर्ग में गहरी चर्चा और चिंता को जन्म दिया है। कांग्रेस से निष्कासित विधायक राहुल ममकूटाथिल का विशेष जांच दल (एसआईटी) के सामने पेश होना केवल एक कानूनी प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह उस जटिल तंत्र का प्रतीक है जहां राजनीति, कानून, नैतिकता और सामाजिक विश्वास एक-दूसरे से टकराते हैं। तिरुवनंतपुरम में पुलिस क्लब स्थित जांच केंद्र में उनकी उपस्थिति इस बात का संकेत थी कि कानून की प्रक्रिया अब निर्णायक चरण में प्रवेश कर चुकी है और आने वाले समय में इस मामले का परिणाम कई स्तरों पर प्रभाव डालेगा।

यह मामला केवल एक व्यक्ति पर लगे आरोपों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ को भी सामने लाता है जिसमें सत्ता और जवाबदेही के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक हो जाता है। राहुल ममकूटाथिल, जो कभी कांग्रेस पार्टी के सक्रिय और प्रभावशाली चेहरों में से एक माने जाते थे, आज एक ऐसे मुकाम पर खड़े हैं जहां उनकी राजनीतिक पहचान और व्यक्तिगत छवि दोनों जांच के दायरे में हैं। उन पर एक महिला द्वारा लगाए गए गंभीर आरोपों ने न केवल उनके राजनीतिक भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है, बल्कि यह भी दिखाया है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं होता।

इस पूरे घटनाक्रम में केरल उच्च न्यायालय की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। अदालत ने उन्हें अग्रिम जमानत प्रदान करते हुए कुछ स्पष्ट और कठोर शर्तें निर्धारित की हैं, जिनका पालन करना उनके लिए अनिवार्य है। अदालत का यह निर्णय एक संतुलित दृष्टिकोण को दर्शाता है, जिसमें एक ओर आरोपी के कानूनी अधिकारों की रक्षा की गई है और दूसरी ओर जांच प्रक्रिया को प्रभावित होने से रोकने के लिए आवश्यक प्रतिबंध लगाए गए हैं। अदालत द्वारा मोबाइल फोन जमा करने और नियमित रूप से जांच अधिकारियों के समक्ष उपस्थित होने का निर्देश इस बात का प्रमाण है कि न्यायिक प्रणाली मामले की गंभीरता को समझते हुए सावधानीपूर्वक आगे बढ़ रही है।

राजनीतिक दृष्टि से यह मामला कांग्रेस के लिए भी एक चुनौतीपूर्ण स्थिति लेकर आया है। पार्टी ने आरोप सामने आने के बाद राहुल ममकूटाथिल को निष्कासित करने का निर्णय लिया, जो यह दर्शाता है कि राजनीतिक दल अब ऐसे मामलों में अपनी छवि और नैतिक जिम्मेदारी को लेकर अधिक सजग हो रहे हैं। यह कदम न केवल पार्टी की आंतरिक अनुशासन प्रणाली को मजबूत करने का संकेत देता है, बल्कि यह भी बताता है कि राजनीतिक दल सार्वजनिक विश्वास को बनाए रखने के लिए कठोर निर्णय लेने से पीछे नहीं हट रहे हैं।

इस मामले का सामाजिक प्रभाव भी अत्यंत व्यापक है। समाज में यौन उत्पीड़न जैसे मामलों को लेकर जागरूकता और संवेदनशीलता पिछले कुछ वर्षों में काफी बढ़ी है। ऐसे मामलों में पीड़ितों की आवाज को गंभीरता से सुना जाना और निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करना न्याय व्यवस्था की विश्वसनीयता के लिए आवश्यक है। यह मामला इस बात का भी प्रतीक है कि आज के समय में पीड़ितों के पास अपनी बात रखने और न्याय की मांग करने के लिए अधिक अवसर और समर्थन उपलब्ध है। तिरुवनंतपुरम, जो केरल की प्रशासनिक और राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र है, इस मामले के कारण एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बन गया है। तिरुवनंतपुरम में स्थित पुलिस क्लब में हुई पूछताछ केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि यह उस व्यापक जांच का हिस्सा है जिसका उद्देश्य सत्य को सामने लाना है।

संपादकीय

आध्यात्मिक उन्नति संग स्वास्थ्य को संबल

भारत की सनातन परंपरा में महाशिवरात्रि केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि जीवन के गहरे वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और स्वास्थ्य संबंधी रहस्यों को समझने का एक अद्भुत अवसर है। हमारे पूर्वजों ने प्रकृति, मानव शरीर और ब्रह्मांड के बीच के संबंध को गहराई से समझते हुए ऐसे पर्वों की रचना की, जो मनुष्य को केवल ईश्वर से ही नहीं, बल्कि स्वयं से और प्रकृति से भी जोड़ते हैं। महाशिवरात्रि का पर्व भी इसी दिव्य परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो हमें आत्मसंयम, मानसिक शांति, शारीरिक संतुलन और सामाजिक समरसता का संदेश देता है। यह पर्व उस समय आता है जब प्रकृति एक महत्वपूर्ण परिवर्तन से गुजर रही होती है। शीत ऋतु धीरे-धीरे समाप्त हो रही होती है और वसंत ऋतु का आगमन प्रारंभ हो जाता है। यह समय शरीर के लिए अत्यंत संवेदनशील होता है, क्योंकि मौसम के परिवर्तन का सीधा प्रभाव हमारे शरीर की कार्यप्रणाली पर पड़ता है। आयुर्वेद के अनुसार इस समय शरीर में वात, पित्त और कफ का संतुलन प्रभावित हो सकता है। यदि इस समय उचित आहार, संयम और साधना का पालन किया जाए, तो शरीर को नई ऊर्जा और संतुलन प्राप्त होता है। महाशिवरात्रि का व्रत इसी वैज्ञानिक सिद्धांत पर आधारित है, जो शरीर को शुद्ध करने और उसे नई ऊर्जा देने का कार्य करता है। व्रत का वास्तविक अर्थ केवल भोजन का त्याग करना नहीं है, बल्कि यह आत्मसंयम और आत्मशुद्धि की एक प्रक्रिया है। जब व्यक्ति व्रत करता है, तो उसका पाचन तंत्र विश्राम प्राप्त करता है। यह विश्राम शरीर के अंदर संचित विषैले तत्वों को बाहर निकालने में सहायक होता है। आधुनिक विज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि समय-समय पर उपवास करने से शरीर की कोशिकाएं पुनर्जीवित होती हैं और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। महाशिवरात्रि के व्रत में फल, दूध और हल्के प्राकृतिक आहार का सेवन किया जाता है, जो शरीर को आवश्यक पोषण प्रदान करते हुए उसे हल्का और ऊर्जावान बनाए रखते हैं। इस पर्व का मानसिक और भावनात्मक महत्व भी अत्यंत गहरा है। आज के आधुनिक युग में मनुष्य का जीवन अत्यधिक व्यस्त और तनावपूर्ण हो गया है। प्रतिस्पर्धा, जिम्मेदारियों और भौतिक इच्छाओं के दबाव ने व्यक्ति के मन को अशांत कर दिया है। महाशिवरात्रि का पर्व व्यक्ति को इस तनावपूर्ण जीवन से कुछ समय के लिए दूर होकर आत्मचिंतन करने का अवसर प्रदान करता है। जब व्यक्ति मंदिर में जाकर भगवान शिव का जलाभिषेक करता है और ध्यान करता है, तो उसका मन शांत होता है और वह अपने भीतर की शांति को अनुभव करता है। यह प्रक्रिया मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होती है। महाशिवरात्रि का सामाजिक महत्व भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इस दिन समाज के सभी वर्गों के लोग बिना किसी भेदभाव के एक साथ मंदिरों में एकत्र होते हैं। मंदिरों की कतारों में खड़े लोग यह अनुभव करते हैं कि वे सभी समान हैं और सभी ईश्वर की संतान हैं। यह अनुभव समाज में समानता, भाईचारे और समरसता की भावना को मजबूत करता है। इस दिन जगह-जगह भंडारों का आयोजन होता है, जहां लोगों को निःशुल्क भोजन और फल वितरित किए जाते हैं। यह परंपरा समाज में सेवा, दान और सहयोग की भावना को बढ़ावा देती है। महाशिवरात्रि का पर्व हमें प्रकृति के साथ हमारे गहरे संबंध का भी स्मरण कराता है। भगवान शिव को प्रकृति का प्रतीक माना जाता है। उनका स्वरूप हमें यह संदेश देता है कि मानव जीवन का अस्तित्व प्रकृति के संतुलन पर निर्भर है। उनके सिर पर बहने वाली गंगा जीवन का प्रतीक है, उनके गले में सर्प प्रकृति के रहस्यों का प्रतीक है और उनका निवास स्थान पर्वत प्रकृति की स्थिरता का प्रतीक है। यह सभी प्रतीक हमें यह सिखाते हैं कि हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए और उसके साथ संतुलन बनाकर जीवन जीना चाहिए। इस पर्व का एक और महत्वपूर्ण पहलू आत्मसंयम का अभ्यास है। आत्मसंयम जीवन का एक महत्वपूर्ण गुण है, जो व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत बनाता है। जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं और भौतिक आकर्षणों पर नियंत्रण रखता है, तो वह अपने जीवन में अधिक संतुलन और शांति प्राप्त करता है। महाशिवरात्रि का व्रत और साधना व्यक्ति को आत्मसंयम का अभ्यास करने का अवसर प्रदान करते हैं। यह आत्मसंयम व्यक्ति को जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए मजबूत बनाता है। महाशिवरात्रि का पर्व हमें सरल और सहज जीवन जीने की प्रेरणा भी देता है। इस दिन लोग अपने दैनिक जीवन की जटिलताओं और कृत्रिमताओं को त्यागकर एक सरल और प्राकृतिक जीवन का अनुभव करते हैं। वे मंदिरों में जाकर ध्यान करते हैं, भजन-कीर्तन में भाग लेते हैं और अपने परिवार और समाज के साथ समय बिताते हैं। यह अनुभव व्यक्ति को मानसिक रूप से ताजगी और प्रसन्नता प्रदान करता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी यह सिद्ध हो चुका है कि आध्यात्मिक गतिविधियों में भाग लेने और ध्यान करने से मानसिक तनाव कम होता है और शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

करुणा के दीप दूर करेंगे हिंसा के अंधकार

> “बुद्ध अंगुलिमाल से मिले, तो उसकी हिंसा रुक गई। बिना हथियार उठाए, केवल शांति और अहिंसा के संदेश से। वह भिक्षु बनकर निर्वाण की ओर अग्रसर हुआ। करुणा व हृदय परिवर्तन की मिसाल है यह कहानी। आज जरूरत है कि केवल अंगुलिमाल जन्म न लें, बुद्ध भी जन्म लें।

अंगुलिमाल श्रावस्ती के जंगलों में राहगीरों को लूटकर उनकी उंगलियां काटता और माला बनाकर गले में पहनता था। बुद्ध मिले, तो उसकी हिंसा रुक गई। बिना हथियार उठाए, केवल शांति और अहिंसा के संदेश से। वह भिक्षु बनकर निर्वाण की ओर अग्रसर हुआ। करुणा और हृदय परिवर्तन की मिसाल है यह कहानी। वर्तमान में जब धरती पर हर दिन लगभग साढ़े तीन लाख मानव शिशु जन्म ले रहे हैं, तो मानवता पुकार करती है कि केवल अंगुलिमाल जन्म न लें, बुद्ध भी जन्म लें। आज हम अंधे युग में जी रहे हैं, जहां मानवीय श्रद्धा भी विकलांग है और विश्वास भी। एनसीआरबी डेटा के अनुसार, 2025 में पारिवारिक अपराध 20 फीसदी बढ़ गए हैं और बुद्ध जैसा आध्यात्मिक हस्तक्षेप आज पारिवारिक-सामाजिक स्तर पर गुमशुदा सा हो गया है। एक बच्चा जिसकी आंखों में हर रिश्ते पर विश्वास है, मासूमियत है, ललक है दुनिया को जानने की, उसे ईर्ष्या का शिकार बनाया जाता है। पानीपत की साइको किलर, निठारी कांड सरीखी हज़ारों घटनाएं बताती हैं कि अपनों पर विश्वास का भाव भूलभुलैया में दम तोड़ रहा है।

लेकिन जीवन रूपी सीढ़ियों पर अंधेरी साजिशें इतनी हैं कि रोशनी के चेहरे पर हरकत ही नहीं होती। युवाओं का जोश कहीं बेरोजगारी की त्रासदी शिथिल कर देती है तो कहीं व्यक्तिगत मनोभाव। पढ़ाई, परीक्षा, परिवार और प्रेम के बीच हिलोरे लेती जीवन की दशा और दिशा को रिझाने के लिए जब वह केवल और केवल पैसा कमाना ही समाधान पाता है तो अतिशीघ्र मालामाल होने के रास्ते खोजता है। वह उन रास्तों पर स्वयं को संलिप्त पाता है जहां अंगुलिमाल तैयार होते हैं। इस्राइल-गाज़ा का संघर्ष, रूस-यूक्रेन युद्ध, सूडान सिविल वॉर, इथियोपिया में जानलेवा झड़पें, अलकायदा, आईएसआईएस आदि संगठनों की क्रूरता से उपजी मानवीय आपदाएं, दुनिया की सबसे बड़ी प्राकृतिक आपदाओं से अधिक विध्वंसक हैं।

अस्तित्व की लड़ाई है या अहम की, यह समझने का समय, जब किसी भी पक्ष के पास न हो तो परिस्थितियों से निर्मित विषमताओं का हिमालय बनता है। मानवता रक्तरंजित नदियों की साक्षी बनती है। सतयुग, द्वापर या त्रेतायुग में, युद्ध, अस्तित्व की लड़ाई के लिए होते थे, धर्म-अधर्म, अच्छाई-बुराई या पाप-पुण्य के पृथक्करण और कुरीतियों को मिटाने के लिए होते थे। शायद इसीलिए अंगुलिमाल और बुद्ध की मुलाकात संभव थी किंतु किंतु आज युद्ध शक्ति का प्रतीक बन चुके हैं, कलुषित सोच से उपजी रणनीतियों के हैं जो निरंतर गीली लकड़ियों की तरह सुलगते रहते हैं और धुआं बनकर केवल एक क्षेत्र विशेष को नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर युद्धों की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों में गांधी या बुद्ध जैसे नेता हर मुहाने पर चाहिए अन्यथा अंतर्राष्ट्रीय नियामक संस्थाएं व संधियों के प्रयास भी नरसंहार को रोक नहीं पाएंगे। आज ओरिजिनल ह्यूमन इंटेलिजेंस से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के मॉडल प्रशिक्षित होकर जिस प्रकार प्रतिस्थापित हो रहे हैं, ऐसा न हो कि पृथ्वी पर चौरासी लाख योनियों में एक योनि आर्टिफिशियल ह्यूमन की जुड़ जाए व मानव हाशिये पर आ जाए।

आज के युग में अंगुलिमाल यूं ही नहीं जन्म लेते, कमज़ोर मनःस्थिति, दुर्बल परवरिश, उलझे हुए इतिहास, जातीय बंटवारे, कमज़ोर या नाकाम सरकारें, विदेशी दखल और दम तोड़ती शांति प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप जन्म लेते हैं। ब्रह्मांड में सूर्य विघटन से प्रकाश पैदा करता है तो पृथ्वी पर दिन होता है। रात हुई तो मानव ने ऊर्जा खोजी व रात्रि में करोड़ों घर रोशन हुए किंतु हिरोशिमा-नागासाकी, गाज़ा आदि में उसी सूत्र से करोड़ों रोशनियां बुझ गईं।

दुनिया को बुद्ध तो मिले किंतु युद्ध निरंतर होते रहे। आज साहस और दुस्साहस के बीच का महीन अंतर जो समझ जाएगा, वही युद्ध से बच पाएगा। अंगुलिमाल सिद्ध करता है कि कोई भी अपराधी परिवर्तनीय है, यदि सच्चा बुद्ध-तुल्य मार्गदर्शक मिले। आज जब विश्व के अनेक कोनों में बारूद की गंध मानवता की सांसों पर भारी पड़ रही है—तो ऐसे समय में प्रश्न केवल राजनीतिक नहीं, आध्यात्मिक भी है। ‘सहस्र अंगुलिमाल, अब इतने बुद्ध कहां से लाऊं?’ यह पुकार समूची मानवता की है। इतिहास साक्षी है कि जब हिंसा अपनी पराकाष्ठा पर पहुंची, तब करुणा का एक स्वर भी दिशा बदल सकता था। गौतम बुद्ध ने अंगुलिमाल के भीतर छिपे मनुष्य को जगाया था; उन्होंने शस्त्र नहीं उठाया, दृष्टि बदली। आज आवश्यकता है कि विश्व-नेतृत्व ‘विजय’ की भाषा छोड़ ‘विवेक’ की भाषा सीखे।

‘बुद्धम् शरणं गच्छामि’ का अर्थ केवल धार्मिक उद्‌घोष नहीं, बल्कि एक नैतिक प्रतिज्ञा है कि मैं बुद्धत्व यानी विवेक, करुणा व संयम की शरण में जाता हूं। आज हमें हजारों बुद्ध के पुनर्जन्म की प्रतीक्षा करनी चाहिए किंतु हमें अपने भीतर के एक बुद्ध को जागृत करना है। यदि विश्व समुदाय सच में ‘बुद्धम् शरणं गच्छामि’ को आचरण में उतार ले, तो सहस्र अंगुलिमाल भी शस्त्र त्याग सकते हैं।

प्रेरणा

अनमोल जीवन का सत्य और शांति की सर्वोच्च विजय

मनुष्य का जीवन इस सृष्टि की सबसे अद्भुत और अनमोल रचना है। यह केवल सांसों का चलना या समय का बीतना नहीं है, बल्कि यह चेतना, संवेदना और विवेक की एक दिव्य यात्रा है। इस यात्रा में मनुष्य को अनेक अवसर मिलते हैं, जहां वह अपने भीतर छिपे हुए गुणों को पहचान सकता है और अपने व्यवहार से संसार को बेहतर बना सकता है। लेकिन दुर्भाग्य से अधिकांश लोग इस जीवन के वास्तविक महत्व को तब तक नहीं समझ पाते, जब तक वे किसी गहरे अनुभव या सत्य से सामना नहीं करते। वे छोटी-छोटी बातों में उलझकर अपने भीतर अशांति पैदा कर लेते हैं और कभी-कभी ऐसे संघर्षों में उलझ जाते हैं, जिनका कोई स्थायी अर्थ नहीं होता।

एक समय की बात है, दो गांवों के बीच एक नदी बहती थी। वही नदी दोनों गांवों की जीवनरेखा थी। उसी का जल खेतों को हरा-भरा करता था, पशुओं की प्यास बुझाता था और लोगों के दैनिक जीवन को सहज बनाता था। वर्षों से दोनों गांवों के लोग इस जल का उपयोग करते हुए आपसी सौहार्द और सहयोग के साथ जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनके बीच विश्वास था और वे यह समझते थे कि प्रकृति का दिया हुआ यह उपहार सभी के लिए समान है। लेकिन समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता। एक वर्ष वर्षा कम हुई और नदी का जल कम होने लगा। धीरे-धीरे पानी की कमी महसूस होने लगी। यह कमी केवल भौतिक नहीं थी, बल्कि लोगों के मन में असुरक्षा की भावना भी पैदा करने लगी।

कुछ ही समय में यह असुरक्षा विवाद में बदल गई। दोनों गांवों के लोग यह सोचने लगे कि यदि पानी कम हो गया तो उनका जीवन संकट में पड़ जाएगा। इस भय ने उनके भीतर स्वार्थ और अधिकार की भावना को जन्म दिया। एक दिन दोनों गांवों के लोग नदी के किनारे एकत्र हुए और आपस में बहस करने लगे। पहले तो यह बहस केवल शब्दों तक सीमित थी, लेकिन धीरे-धीरे इसमें क्रोध और अहंकार शामिल हो गया। लोग एक-दूसरे पर आरोप लगाने लगे और अपने अधिकार को सिद्ध करने के लिए आक्रामक हो गए। स्थिति इतनी गंभीर हो गई कि उन्होंने हथियार उठा लिए। उनके चेहरों पर क्रोध की ज्वाला थी और उनके मन में केवल एक ही विचार था—किसी भी कीमत पर पानी पर अपना अधिकार स्थापित करना।

उसी समय वहां से एक संत गुजर रहे थे। उनका चेहरा शांत था और उनकी आंखों में गहरी करुणा थी। उन्होंने लोगों को इस अवस्था में देखा और उनके पास आकर शांत स्वर में पूछा, “आप लोग इस प्रकार क्यों लड़ रहे हैं?” लोगों ने उत्तर दिया, “हम पानी के लिए लड़ रहे हैं, क्योंकि यह हमारे जीवन के लिए आवश्यक है।” संत ने कुछ क्षण मौन रहकर फिर पूछा, “पानी का मूल्य क्या है?” लोगों ने सहजता से कहा, “पानी का कोई मूल्य नहीं है। यह तो हमें प्रकृति से बिना किसी मूल्य के मिलता है।”

संत ने फिर एक और प्रश्न किया, “और मनुष्य के जीवन का क्या मूल्य है?” इस बार लोगों का उत्तर अलग था। उन्होंने कहा, “मनुष्य का जीवन अनमोल है। इसका कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता।” संत ने तब अत्यंत गंभीर स्वर में कहा, “यदि पानी का कोई मूल्य नहीं है और जीवन अनमोल है, तो क्या उस अनमोल जीवन को एक ऐसी वस्तु के लिए नष्ट करना उचित है, जिसका कोई मूल्य ही नहीं है?”

यह सुनते ही वहां सन्नाटा छा गया। लोगों के मन में जो क्रोध था, वह धीरे-धीरे शांत होने लगा। उनके हाथों में पकड़े हथियार नीचे झुक गए। उनके भीतर विवेक की ज्योति जल उठी। उन्होंने महसूस किया कि वे एक ऐसी वस्तु के लिए अपने ही समान अनमोल जीवन को समाप्त करने के लिए तैयार थे, जिसका मूल्य उन्होंने स्वयं शून्य बताया था। यह विचार उनके हृदय को भीतर तक झकझोर गया।

संत ने आगे कहा, “जीवन की सबसे बड़ी जीत किसी को हराने में नहीं, बल्कि अपने भीतर के क्रोध और अहंकार को जीतने में है। जब आप वैर का उत्तर वैर से देते हैं, तो केवल संघर्ष बढ़ता है। लेकिन जब आप वैर का उत्तर शांति और प्रेम से देते हैं, तो शत्रुता समाप्त हो जाती है। सच्चा विजेता वही है, जो अपने भीतर शांति को स्थापित कर सके और दूसरों के साथ सहयोग और सह-अस्तित्व का मार्ग अपनाए।”

उनके शब्दों में एक गहरी सच्चाई थी। दोनों गांवों के लोगों ने अपने हथियार नीचे रख दिए। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और उनके मन में पश्चाताप की भावना उत्पन्न हुई। उन्हें यह एहसास हुआ कि वे अपने ही जैसे मनुष्यों के विरुद्ध खड़े थे, जिनकी आवश्यकताएं और भावनाएं उनके जैसी ही थीं। उस क्षण उन्होंने यह समझ लिया कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य संघर्ष नहीं, बल्कि सहयोग है।

उन्होंने यह निर्णय लिया कि वे पानी को लेकर कभी विवाद नहीं करेंगे। वे उसे मिल-बांटकर उपयोग करेंगे और आपसी समझ के साथ जीवन व्यतीत करेंगे। उस दिन उन्होंने यह सीखा कि जीवन की सच्ची सार्थकता दूसरों को हराने में नहीं, बल्कि सभी के साथ मिलकर आगे बढ़ने में है।

यह घटना हमें यह सिखाती है कि मनुष्य का जीवन किसी भी भौतिक वस्तु से अधिक मूल्यवान है। जब मनुष्य अपने अहंकार और स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों के हित के बारे में सोचता है, तभी वह सच्चे अर्थों में मनुष्य कहलाने योग्य बनता है। जीवन का उद्देश्य केवल अपने लिए जीना नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी जीना है।

जब हम अपने भीतर शांति, करुणा और सहनशीलता को स्थान देते हैं, तब हमारा जीवन वास्तव में सार्थक बनता है। हम हर परिस्थिति में संतुलित रहते हैं और किसी भी संघर्ष को शांति से हल करने की क्षमता प्राप्त करते हैं। यही जीवन की सच्ची विजय है। यही वह मार्ग है, जो मनुष्य को महान बनाता है और उसे सच्ची खुशी और संतोष प्रदान करता है।

सबके लिए एआईः प्रमुख घटकों को समझिए, चुनौतियों से निबटिये और अपेक्षित लाभ पाइए

“एआई सबके लिए” भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसे इंडियाAI मिशन के रूप में जाना जाता है। यह मिशन कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) को समावेशी, सुरक्षित और जिम्मेदार तरीके से सभी के लिए सुलभ बनाने पर केंद्रित है। इस मिशन का लक्ष्य भारत में मजबूत AI कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर स्थापित करना है, जो AI प्रणालियों के विकास, परीक्षण और तैनाती को समर्थन देगा। यह घरेलू AI तकनीकों को बढ़ावा देकर विदेशी निर्भरता कम करने, डेटा गुणवत्ता सुधारने और नैतिक AI प्रथाओं को प्रोत्साहित करने पर जोर देता है। समाज के सभी वर्गों, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए AI लाभ सुनिश्चित करना इसका मूल सिद्धांत है। इसके प्रमुख घटक निम्नलिखित हैंः- पहला, कंप्यूटिंग क्षमता यानी हाई-एंड GPU क्लस्टर के माध्यम से AI मॉडल ट्रेनिंग को सक्षम बनाना। दूसरा, सामाजिक अनुप्रयोग यानी स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा और शासन जैसे क्षेत्रों में AI-संचालित समाधान विकसित करना। और तीसरा, स्टार्टअप और नवाचार समर्थन यानी शीर्ष प्रतिभाओं को आकर्षित करना, उद्योग सहयोग बढ़ाना और स्टार्टअप्स को फंडिंग प्रदान करना। चतुर्थ, सामाजिक प्रभाव यानी यह मिशन AI को लोकतांत्रिक बनाकर “AI for All” की अवधारणा को साकार करता है, ताकि यह नौकरियों को प्रभावित न करे बल्कि सतत विकास लक्ष्यों को तेजी से प्राप्त करने में मदद करे। हालिया AI इम्पैक्ट समिट 2026 में भी इसकी समावेशी पहुंच पर जोर दिया गया।

हालांकि इंडियाAI मिशन की प्रमुख चुनौतियां बुनियादी ढांचे, डेटा प्रबंधन और मानव संसाधन से जुड़ी हैं। ये चुनौतियां मिशन के समावेशी लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधा बन सकती हैं। इसकी राह की तकनीकी बाधाएं निम्नवत हैंः- सीमित GPU क्षमता और उच्च लागत AI मॉडल ट्रेनिंग को कठिन बनाती है, जबकि क्लाउड कंप्यूटिंग अवसंरचना की कमी तैनाती को प्रभावित करती है। डेटा गुणवत्ता और विविधता, खासकर इंडिक भाषाओं के लिए, अपर्याप्त है। ऊर्जा खपत भी एक बड़ी समस्या है, क्योंकि डेटा सेंटरों की मांग तेजी से बढ़ रही है।

जहां तक नीतिगत व नियामक मुद्दे की बात है तो डेटा गोपनीयता कानूनों का अभाव व्यक्तिगत डेटा दुरुपयोग की चिंता बढ़ाता है, और भू-राजनीतिक प्रतिबंध GPU जैसे हार्डवेयर तक पहुंच सीमित करते हैं। डिजिटल डिवाइड ग्रामीण क्षेत्रों में AI पहुंच को रोकता है। नौकरी विस्थापन का खतरा BPO और लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्रों में है। वहीं मानव संसाधन की भी कमीहै। खासकर कुशल AI विशेषज्ञों की भारी कमी है, जहां केवल 11% कार्यबल उन्नत डिजिटल कौशल से लैस है। प्रशिक्षण अंतराल को पाटना समय लेगा। नैतिक AI उपयोग के लिए नियामक ढांचे की जरूरत है।

लिहाजा इंडियाAI मिशन अपने सम्मुख उपस्थित चुनौतियों का समाधान संरचित घटकों और रणनीतियों के माध्यम से करेगा। यह तकनीकी, नीतिगत और मानव संसाधन संबंधी बाधाओं को दूर करने पर केंद्रित है।जहां तक तकनीकी समाधान की बात है तो GPU क्षमता की कमी को 10,000+ GPU वाले कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर से दूर किया जाएगा, जिसमें सार्वजनिक-निजी भागीदारी शामिल है। जबकि डेटा गुणवत्ता के लिए इंडियाAI डेटासेट प्लेटफॉर्म गैर-व्यक्तिगत डेटा तक अबाधित पहुंच प्रदान करेगा, विशेष रूप से इंडिक भाषाओं पर फोकस के साथ। ऊर्जा खपत को नवीकरणीय स्रोतों और ऊर्जा-कुशल AI एल्गोरिदम से प्रबंधित करने की योजना है।

जहां तक इसके नीतिगत उपाय की बात है तो डेटा गोपनीयता और नियामक मुद्दों के लिए जिम्मेदार AI ढांचा विकसित किया जा रहा है, जिसमें दिशा-निर्देश और शासन शामिल हैं। डिजिटल डिवाइड को टियर-2/3 शहरों में AI शिक्षा विस्तार से पाटा जाएगा, जबकि स्वदेशी मॉडल विकास विदेशी निर्भरता कम करेगा। नौकरी विस्थापन पर सामाजिक अनुप्रयोगों के जरिए स्वास्थ्य, कृषि जैसे क्षेत्रों में नए अवसर सृजित होंगे। वहीं, मानव संसाधन विकास के दृष्टिगत कौशल कमी को भविष्य कौशल पहल से दूर किया जाएगा, जिसमें AI प्रशिक्षण कार्यक्रम और स्टार्टअप फंडिंग शामिल है। शीर्ष प्रतिभाओं को आकर्षित करने हेतु नवाचार केंद्र स्थापित होंगे, जिससे 11% डिजिटल कौशल अंतर को कम किया जा सकेगा।

वास्तव में इंडियाAI मिशन से भारत को आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी क्षेत्रों में बहुआयामी लाभ अपेक्षित हैं। यह मिशन AI को लोकतांत्रिक बनाकर समावेशी विकास को गति देगा। जहां तक आर्थिक लाभ की बात है तो यह मिशन स्वदेशी AI मॉडल विकसित कर विदेशी निर्भरता कम करेगा, जिससे स्टार्टअप्स को फंडिंग और कंप्यूटिंग संसाधन मिलेंगे। इससे AI इंडस्ट्री में रोजगार सृजन होगा और GDP में योगदान बढ़ेगा, विशेष रूप से कृषि, स्वास्थ्य और खुदरा क्षेत्रों में कार्यकुशलता सुधार के जरिए।

जहां तक सामाजिक प्रभाव की बात है तो स्वास्थ्य में पूर्वानुमानित निदान, कृषि में फसल प्रबंधन और शिक्षा में वैयक्तिकृत सीखने जैसे अनुप्रयोग जीवन स्तर सुधारेंगे। जबकि इंडिक भाषाओं पर आधारित डेटासेट से ग्रामीण और हाशिए वाले समुदायों को समान पहुंच मिलेगी।वहीं तकनीकी प्रगति के तहत 10,000+ GPU इंफ्रास्ट्रक्चर से नवाचार केंद्र मजबूत होंगे, जिससे भारत वैश्विक AI नेतृत्व प्राप्त करेगा। क्योंकि जिम्मेदार AI ढांचे से नैतिक उपयोग सुनिश्चित होगा।

अभियान

महाकाल की अनंत सत्ताः क्यों भगवान शिव हैं सृष्टि के परम आधार और सर्वोच्च चेतना

इस ब्रह्मांड में यदि किसी शक्ति को सबसे रहस्यमयी, सबसे व्यापक और सबसे गहन माना गया है, तो वह भगवान शिव की सत्ता है। वे केवल एक देवता नहीं, बल्कि अस्तित्व की मूल चेतना हैं। वे सृष्टि के आरंभ से पहले भी थे और सृष्टि के अंत के बाद भी रहेंगे। यही कारण है कि उन्हें अनादि और अनंत कहा गया है। वे समय से परे हैं, इसलिए उन्हें महाकाल कहा जाता है, और वे मृत्यु के भी स्वामी हैं, इसलिए उन्हें कालों के काल कहा गया है। भगवान शिव केवल शक्ति नहीं हैं, वे शांति भी हैं; वे संहार भी हैं और सृजन का मूल कारण भी हैं। वे विनाश करते हैं, लेकिन वह विनाश भी नए सृजन का मार्ग प्रशस्त करने के लिए होता है। यही शिव का दिव्य रहस्य है, जो उन्हें समस्त देवताओं में सर्वोच्च बनाता है।

भगवान शिव की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सरलता और निष्कपटता है। वे किसी आडंबर या वैभव में विश्वास नहीं करते। वे पर्वतों पर निवास करते हैं, व्याघ्रचर्म धारण करते हैं, शरीर पर भस्म लगाते हैं और गले में सर्प को धारण करते हैं। यह स्वरूप हमें यह संदेश देता है कि सच्ची शक्ति बाहरी आभूषणों में नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना में होती है। उनका यह रूप इस सत्य का प्रतीक है कि जो व्यक्ति अपने अहंकार, इच्छाओं और मोह से मुक्त हो जाता है, वही वास्तविक शक्ति का अधिकारी बनता है।

भगवान शिव का एक और महान रहस्य उनका त्याग है। जब समुद्र मंथन हुआ और उसमें से हलाहल विष निकला, तो वह विष इतना घातक था कि पूरे ब्रह्मांड को नष्ट कर सकता था। उस समय कोई भी देवता या असुर उसे पीने का साहस नहीं कर सका। तब भगवान शिव ने समस्त सृष्टि की रक्षा के लिए उस विष को स्वयं पी लिया। उन्होंने उस विष को अपने कंठ में धारण किया, जिससे उनका कंठ नीला हो गया और वे नीलकंठ कहलाए। यह घटना केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि यह त्याग और करुणा का सर्वोच्च उदाहरण है। यह दर्शाता है कि सच्ची शक्ति वही है, जो दूसरों की रक्षा के लिए स्वयं कष्ट सहन करने को तैयार हो।

भगवान शिव का परिवार भी इस ब्रह्मांडीय संतुलन का प्रतीक है। उनकी अर्धांगिनी माता पार्वती शक्ति का स्वरूप हैं, जो ऊर्जा और सृजन का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनके पुत्र भगवान गणेश बुद्धि और विवेक के देवता हैं, जबकि कार्तिकेय साहस और युद्ध कौशल के प्रतीक हैं। उनका वाहन नंदी धर्म और निष्ठा का प्रतीक है। यह पूरा परिवार हमें यह संदेश देता है कि जीवन में शक्ति, बुद्धि, साहस और धर्म का संतुलन आवश्यक है।

भगवान शिव का निवास स्थान भी उनके रहस्य को और गहरा बनाता है। कैलाश पर्वत को उनका धाम माना जाता है, जो भौतिक और आध्यात्मिक संसार के बीच का सेतु है। यह स्थान केवल एक पर्वत नहीं, बल्कि चेतना की उस ऊंचाई का प्रतीक है, जहां पहुंचकर मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान सकता है। इसी प्रकार काशी को उनका प्रिय नगर माना जाता है। कहा जाता है कि काशी में मृत्यु प्राप्त करने वाला व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करता है, क्योंकि वहां स्वयं शिव मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं।

भगवान शिव का स्वरूप विरोधाभासों का अद्भुत संगम है। वे एक ओर भयंकर रुद्र हैं, तो दूसरी ओर भोलेनाथ हैं। वे संहारक भी हैं और सबसे बड़े रक्षक भी हैं। वे तपस्वी भी हैं और गृहस्थ भी हैं। यह विरोधाभास ही उनके पूर्णत्व को दर्शाता है। वे हमें यह सिखाते हैं कि जीवन में संतुलन ही सबसे बड़ी शक्ति है। जब मनुष्य अपने भीतर के सभी विरोधाभासों को स्वीकार कर लेता है, तभी वह पूर्णता को प्राप्त करता है।

भगवान शिव का तांडव नृत्य भी उनके सर्वोच्च स्वरूप का प्रतीक है। जब वे तांडव करते हैं, तो वह केवल एक नृत्य नहीं होता, बल्कि वह सृष्टि के निर्माण, पालन और संहार का प्रतीक होता है। उनके डमरू से निकली ध्वनि से ही ध्वनि, भाषा और संगीत की उत्पत्ति हुई मानी जाती है। यह दर्शाता है कि वे केवल भौतिक संसार के ही नहीं, बल्कि ज्ञान और कला के भी आदि स्रोत हैं।

भगवान शिव की उपासना का सबसे महत्वपूर्ण स्वरूप शिवलिंग है। शिवलिंग केवल एक प्रतीक नहीं है, बल्कि यह सृष्टि की अनंत ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। यह निराकार और साकार के बीच का सेतु है। यह हमें यह सिखाता है कि परम सत्य किसी एक रूप में सीमित नहीं है, बल्कि वह हर रूप में विद्यमान है। शिवलिंग की पूजा हमें यह स्मरण कराती है कि हम सभी उसी परम चेतना का हिस्सा हैं।

भगवान शिव की महानता का एक और उदाहरण रावण की कथा में मिलता है। रावण ने कठोर तपस्या करके शिव को प्रसन्न किया और उनसे अद्भुत शक्तियां प्राप्त कीं। यह दर्शाता है कि शिव अपने भक्तों के साथ कोई भेदभाव नहीं करते। वे केवल भक्ति और समर्पण को देखते हैं, न कि किसी का स्वरूप या उद्देश्य।

स्कन्दपुराण और अन्य पुराणों में भगवान शिव के असंख्य चमत्कारों और लीलाओं का वर्णन मिलता है। इन कथाओं का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि यह सिखाना है कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य आत्मज्ञान प्राप्त करना है। शिव हमें यह सिखाते हैं कि जब हम अपने अहंकार, इच्छाओं और भय से मुक्त हो जाते हैं, तभी हम अपनी वास्तविक शक्ति को पहचान सकते हैं।

भगवान शिव का एक और महत्वपूर्ण संदेश वैराग्य है। वे हमें यह सिखाते हैं कि भौतिक संसार की वस्तुएं स्थायी नहीं हैं। सच्ची शांति और संतोष केवल भीतर की चेतना में ही प्राप्त हो सकता है। जब मनुष्य अपने भीतर शिव को खोज लेता है, तब वह सभी दुखों और बंधनों से मुक्त हो जाता है।

भगवान शिव की महिमा केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक गहरा आध्यात्मिक और दार्शनिक सत्य भी है। वे हमें यह सिखाते हैं कि सच्ची शक्ति बाहरी संसार में नहीं, बल्कि हमारे भीतर है। जब हम अपने भीतर की चेतना को जागृत करते हैं, तब हम अपने जीवन को अर्थपूर्ण बना सकते हैं।

इसीलिए भगवान शिव को देवों के देव कहा जाता है। वे केवल एक देवता नहीं, बल्कि सम्पूर्ण अस्तित्व की आत्मा हैं। वे हर कण में विद्यमान हैं, हर धड़कन में उपस्थित हैं। वे ही सृष्टि का आरंभ हैं और वही सृष्टि का अंत हैं। उनकी उपासना केवल पूजा नहीं, बल्कि आत्मज्ञान की यात्रा है। जब मनुष्य इस सत्य को समझ लेता है, तब वह स्वयं शिव के स्वरूप को प्राप्त कर लेता है, और यही जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

सूरत : मनपा बजट में नए पुलों और जनसुविधाओं का प्रस्ताव, लिंबायत क्षेत्र को मिलेगा विशेष लाभ

(जीएनएस)। सूरत। तेजी से विकसित हो रहे सूरत शहर के लिए आगामी मनपा बजट एक नई उम्मीद और विकास की नई दिशा लेकर आया है। शहर के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने, यातायात को सुगम बनाने, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर करने और नागरिकों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव बजट में शामिल किए गए हैं। बांधकाम समिति के अध्यक्ष भाईदास पाटिल ने बजट चर्चा के दौरान स्पष्ट किया कि शहर के संतुलित और समग्र विकास के लिए पुलों, स्कूलों, स्वास्थ्य केंद्रों और सामुदायिक सुविधाओं का विस्तार अत्यंत आवश्यक है और इसी दृष्टि से आने वाले वर्षों में व्यापक योजनाएं लागू की जाएंगी। सूरत म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन द्वारा प्रस्तुत बजट में विशेष रूप से पुलों के निर्माण पर जोर दिया गया है, क्योंकि सूरत जैसे तेजी से फैलते शहर में यातायात का दबाव लगातार बढ़ रहा है। वर्तमान में शहर में 121 पुलों का निर्माण पूरा हो चुका है, जो शहर के विभिन्न हिस्सों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन पुलों ने न केवल यातायात को सुगम बनाया है बल्कि लोगों के समय की बचत भी सुनिश्चित की है। इसके अलावा 13 पुलों का निर्माण कार्य वर्तमान में जारी है, जो आने वाले समय में शहर के यातायात ढांचे को और मजबूत करेंगे। साथ ही 19 पुल अभी योजना के चरण में हैं, जिनकी स्वीकृति और निर्माण की प्रक्रिया जल्द शुरू की जाएगी।

वर्ष 2026–27 के बजट में 15 नए पुलों के निर्माण का प्रस्ताव रखा गया है, जो शहर के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इन पुलों के बनने से शहर के भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में यातायात का दबाव कम होगा, दुर्घटनाओं की संभावना घटेगी और लोगों को अपने गंतव्य तक पहुंचने में कम समय लगेगा। यह पहल न केवल वर्तमान जरूरतों को पूरा करेगी बल्कि भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शहर को तैयार करने का एक दूरदर्शी प्रयास भी है। लिंबायत क्षेत्र, जो सूरत का एक महत्वपूर्ण और तेजी से विकसित हो रहा क्षेत्र है, इस बजट का विशेष लाभार्थी बनने जा रहा है। भाईदास पाटिल ने टी.पी. 41 क्षेत्र में उधना रामायण पार्क से वेजिटेबल मार्केट तक उतरने वाले पुल के निर्माण को प्राथमिकता देने की मांग की है। उन्होंने बताया कि इस पुल के निर्माण से क्षेत्र के हजारों लोगों को सीधा लाभ मिलेगा। वर्तमान में लोगों को लंबा रास्ता तय करना पड़ता है, जिससे समय और ईंधन दोनों की बर्बादी होती है। पुल बनने के बाद यह समस्या समाप्त हो जाएगी और क्षेत्र में यातायात की सुविधा में उल्लेखनीय सुधार होगा।

इस क्षेत्र में खेल सुविधाओं के विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। टी.पी. 41 के फाइनल प्लॉट 101 पर एक आधुनिक स्पोर्ट्स संकुल का निर्माण पूरा हो चुका है। यह संकुल युवाओं के लिए एक बड़ी सौगात साबित हो रहा है, क्योंकि इससे उन्हें अपने खेल कौशल को विकसित करने का अवसर मिलेगा। खेल सुविधाओं के विकास से न केवल युवाओं का शारीरिक विकास होगा बल्कि उनमें अनुशासन और आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

स्वास्थ्य सुविधाओं के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति की गई है। टी.पी. 69 के फाइनल प्लॉट 18 पर एक आधुनिक हेल्थ सेंटर का निर्माण किया गया है, जिससे क्षेत्र के लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं मिल रही हैं। पहले लोगों को छोटी-छोटी स्वास्थ्य समस्याओं के लिए दूर के अस्पतालों में जाना पड़ता था, लेकिन अब स्थानीय स्तर पर ही बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हो रही हैं। इससे समय की बचत हो रही है और लोगों को तत्काल उपचार मिल पा रहा है।

इन विकास कार्यों को गति देने में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री और सांसद सी. आर. पाटिल तथा लिंबायत की विधायक संगीता बेन पाटिल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनके प्रयासों से टी.पी. 41 क्षेत्र में कम्युनिटी हॉल, सुमन स्कूल और पार्टी प्लॉट जैसी परियोजनाओं का निर्माण कार्य तेजी से आगे बढ़ रहा है। कम्युनिटी हॉल बनने से क्षेत्र के लोगों को सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए एक उचित स्थान मिलेगा। इससे सामाजिक एकता और सामुदायिक भावना को भी बढ़ावा मिलेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में भी बजट के माध्यम से महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं। टी.पी. 62 के आर-19 क्षेत्र में एक नया प्राइमरी स्कूल बनाया गया है, जिससे लगभग 2500 विद्यार्थियों को लाभ मिल रहा है। यह स्कूल आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है, जिससे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो रही है। इसके अलावा सुमन स्कूल के निर्माण से लगभग 1000 विद्यार्थियों को शिक्षा की बेहतर सुविधाएं मिल रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में यह निवेश शहर के भविष्य को मजबूत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि शिक्षित युवा ही शहर और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इन सभी परियोजनाओं का उद्देश्य केवल बुनियादी ढांचे का निर्माण करना नहीं है, बल्कि नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाना भी है। बेहतर सड़कें, पुल, स्कूल और स्वास्थ्य केंद्र लोगों के जीवन को आसान बनाते हैं और उन्हें एक सुरक्षित और सुविधाजनक वातावरण प्रदान करते हैं। इससे न केवल लोगों की दैनिक जीवन की समस्याएं कम होती हैं बल्कि शहर की आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलता है।

भाईदास पाटिल ने कहा कि मनपा का लक्ष्य सूरत को एक आधुनिक, सुव्यवस्थित और विश्वस्तरीय शहर बनाना है। उन्होंने विश्वास जताया कि इन सभी विकास परियोजनाओं के पूर्ण होने के बाद सूरत शहर की पहचान और मजबूत होगी और यह देश के प्रमुख विकसित शहरों में अपनी अलग पहचान बनाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि मनपा नागरिकों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए लगातार नई योजनाएं बना रही है और आने वाले समय में शहर में और भी बड़े विकास कार्य देखने को मिलेंगे।

स्थानीय नागरिकों ने भी इन विकास योजनाओं का स्वागत किया है और उम्मीद जताई है कि इन परियोजनाओं के पूर्ण होने से उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव आएगा। पुलों के निर्माण से यातायात आसान होगा, स्कूलों से बच्चों का भविष्य सुरक्षित होगा और स्वास्थ्य केंद्रों से लोगों को बेहतर उपचार मिलेगा।

सूरत शहर पहले से ही अपने औद्योगिक और आर्थिक विकास के लिए जाना जाता है, लेकिन अब मनपा द्वारा किए जा रहे इन प्रयासों से यह शहर बुनियादी ढांचे और जनसुविधाओं के मामले में भी एक आदर्श शहर बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। आने वाला समय सूरत के लिए विकास और प्रगति का नया दौर लेकर आएगा, जिसमें हर नागरिक को बेहतर सुविधाएं और बेहतर जीवन का अवसर मिलेगा।

सेवा और संवेदना का संगम : सलाबतपुरा पुलिस स्टेशन में प्याऊ का लोकार्पण, जनसहयोग से प्यास बुझाने की अनूठी पहल

(जीएनएस)। सूरत। मानव सेवा ही सच्ची पूजा है और जब समाज के विभिन्न वर्ग मिलकर जनहित के कार्यों को आगे बढ़ाते हैं, तो वह केवल एक कार्यक्रम नहीं बल्कि संवेदना और जिम्मेदारी का जीवंत उदाहरण बन जाता है। सूरत शहर के सलाबतपुरा पुलिस स्टेशन परिसर में स्थापित नए "प्याऊ" का लोकार्पण इसी भावना का प्रतीक है, जहां सेवा, सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व का सुंदर समन्वय देखने को मिला। सोमवार, 16 फरवरी 2026 को आयोजित इस गरिमामय कार्यक्रम में समाजसेवी संस्थाओं, उद्योग जगत के प्रतिनिधियों, पुलिस प्रशासन और आम नागरिकों की उपस्थिति ने इस पहल को एक जनआंदोलन का स्वरूप प्रदान किया।

इस प्याऊ की स्थापना "साकेत ग्रुप", "चाय पे चर्चा चैरिटेबल ट्रस्ट" और Allia Fabrics के संयुक्त सहयोग से की गई है। यह इस श्रृंखला का तीसरा प्याऊ है, जिसका उद्देश्य शहर के सार्वजनिक स्थलों पर आम लोगों को स्वच्छ और शीतल पेयजल उपलब्ध कराना है। कार्यक्रम का शुभारंभ अनुपम सिंह गहलोत, पुलिस कमिश्नर, सूरत शहर द्वारा किया गया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि पुलिस स्टेशन में रोजाना बड़ी संख्या में फरियादी, उनके परिजन और आम नागरिक अपनी समस्याओं के समाधान के लिए आते हैं। ऐसे में गर्मी और थकान के बीच उन्हें शीतल जल की सुविधा उपलब्ध कराना एक अत्यंत मानवीय और सराहनीय प्रयास है। उन्होंने इस पहल के लिए सभी आयोजक संस्थाओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार की जनसेवा समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है।

पुलिस स्टेशन केवल कानून और व्यवस्था का केंद्र ही नहीं होता, बल्कि यह आम नागरिकों की उम्मीद और विश्वास का भी केंद्र होता है। यहां आने वाले लोगों की मानसिक स्थिति कई बार तनावपूर्ण होती है, क्योंकि वे किसी समस्या या शिकायत को लेकर आते हैं। ऐसे में उन्हें शीतल जल की सुविधा मिलना न केवल उनकी शारीरिक आवश्यकता को पूरा करता है, बल्कि उन्हें मानसिक रूप से भी राहत प्रदान करता है। यह छोटा सा प्रयास लोगों के मन में पुलिस प्रशासन और समाजसेवी संस्थाओं के प्रति विश्वास और सम्मान की भावना को और मजबूत करता है।

इस अवसर पर पुलिस प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों की भी महत्वपूर्ण उपस्थिति रही। जॉइंट पुलिस कमिश्नर वबांग ज़मीर और डीसीपी कनक देसाई ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि समाज और पुलिस के बीच सहयोग और सहभागिता ही एक सुरक्षित और संवेदनशील समाज की नींव होती है।

22 फरवरी से भावनगर टर्मिनस–बीकानेर के बीच साप्ताहिक "सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन" का संचालन, टिकट बुकिंग 17 फरवरी से शुरू

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा तथा अतिरिक्त यात्री भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे द्वारा भावनगर टर्मिनस और बीकानेर के बीच विशेष किराये पर साप्ताहिक "सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन" का संचालन किया जाएगा। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण निम्नानुसार हैः

ट्रेन संख्या 09271/09272 भावनगर टर्मिनस–बीकानेर सुपरफास्ट स्पेशल

ट्रेन संख्या 09271 भावनगर टर्मिनस–बीकानेर सुपरफास्ट स्पेशल यह ट्रेन 22 फरवरी, 2026 से 29 मार्च, 2026 तक प्रत्येक रविवार को प्रातः 04:25 बजे भावनगर टर्मिनस से प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 01:15 बजे बीकानेर पहुंचेगी।

ट्रेन संख्या 09272 बीकानेर–भावनगर टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल यह ट्रेन 23 फरवरी, 2026 से 30 मार्च, 2026 तक प्रत्येक सोमवार को बीकानेर से सुबह 09.00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 04:35 बजे भावनगर टर्मिनस पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में सिहोर (गुजरात), धोला, बोटाद, सुरेन्द्रनगर गेट, आम्बली रोड, गांधीनगर कैपिटल, महेसाना जं., पालनपुर जं., आबू रोड, फालना, मारवाड़ जं., पाली मारवाड़, लूनी जं., जोधपुर जं., गोटन, मेड़ता रोड जं., नागौर और नोखा स्टेशनों पर ठहराव करेगी। इस ट्रेन में सेकंड एसी, थर्ड एसी, स्लीपर क्लास तथा जनरल सेकेंड क्लास के कोच उपलब्ध होंगे।

बुकिंग जानकारीः

ट्रेन संख्या 09271/09272 की बुकिंग 17 फरवरी, 2026 (मंगलवार) से सभी पीआरएस काउंटरों तथा आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के समय, ठहराव एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

भावनगर मंडल के 04 कर्मचारियों को डीआरएम संरक्षा पुरस्कार से किया गया सम्मानित

(जीएनएस)। भावनगर रेलवे मंडल के मंडल रेल प्रबंधक दिनेश वर्मा ने 16 फरवरी, 2026 (सोमवार) को भावनगर परा स्थित मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में सुरक्षित रेल परिचालन में उत्कृष्ट योगदान के लिए चार कर्मचारियों को डीआरएम संरक्षा पुरस्कार (DRM Safety Award) से सम्मानित किया। इन कर्मचारियों ने जनवरी–फरवरी, 2026 के दौरान सतर्कता एवं त्वरित कार्रवाई से संभावित दुर्घटनाओं को रोकने में अहम भूमिका निभाई। सम्मानित कर्मचारियों में कपिल बर्मा (स्टेशन मास्टर–पोरबंदर), राम प्रसाद मीना (कांटेवाला–भावनगर टर्मिनस), राज कुमार (पॉइंटसमैन–सिहोर जंक्शन) तथा राजू शामजी मकवाणा (कांटेवाला–राणावाव) शामिल हैं। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि मंडल रेल प्रबंधक ने पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों की सतर्कता की सराहना करते हुए कहा कि वे सभी अनुकरणीय आदर्श हैं। कर्मचारियों की उच्च स्तर की प्रतिबद्धता एवं समर्पण ने सुरक्षित रेल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने सभी को बधाई देते हुए भविष्य में भी उत्कृष्ट कार्य करते रहने हेतु प्रोत्साहित किया।

घटनाओं का संक्षिप्त विवरणः

श्री कपिल बर्मा (स्टेशन मास्टर–पोरबंदर): 15.01.2026 को राणावाव स्टेशन पर गाड़ी संख्या 59562 पोरबंदर–राजकोट से उतरते समय एक बच्ची का हाथ दरवाजे के हैंडल में फँस गया और वह चलती ट्रेन से लटक गई। श्री बर्मा ने तुरंत दौड़कर साहसिक ढंग से बच्ची को सुरक्षित बचाया।

श्री राम प्रसाद मीना (कांटेवाला–भावनगर टर्मिनस): 23.01.2026 को पटरी पर असामान्यता देख गाड़ी संख्या 12971 को लाल झंडी दिखाकर रोका। जांच में रेल फ्रैक्चर पाया गया, जिससे संभावित दुर्घटना टल सकी।

श्री राज कुमार (पॉइंटसमैन–सिहोर जंक्शन): 08.02.2026 को प्लेटफॉर्म पर आती ट्रेन संख्या 59229 से उतरते समय गिरी युवती को त्वरित कार्रवाई से बचाया। पूरी घटना सीसीटीवी में दर्ज हुई। श्री राजू शामजी मकवाणा (कांटेवाला–राणावाव): 27.01.2026 को वीरपुर स्टेशन पर लाइन संख्या 01 में रेल फ्रैक्चर देखकर तुरंत स्टेशन मास्टर को सूचना दी, जिससे समय रहते मरम्मत कर गंभीर दुर्घटना टाली जा सकी।

पश्चिम रेलवे का भावनगर मंडल सभी सम्मानित कर्मचारियों की त्वरित सोच, साहस एवं सतर्कता की सराहना करता है, जिनके प्रयासों से यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित हुई और संभावित दुर्घटनाओं को रोका जा सका।

17 फरवरीः चिकित्सा-विधिक जागरूकता दिवस; डॉक्टरों को कानूनी सुरक्षा और न्याय के लिए बड़ी पहल

(जीएनएस)। सूरत। देशभर के शिशु रोग विशेषज्ञों के सबसे बड़े प्रतिनिधि संगठन इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स (IAP) ने 17 फरवरी को 'चिकित्सा-विधिक जागरूकता दिवस' के रूप में मनाते हुए डॉक्टरों के खिलाफ बढ़ती अनुचित कानूनी कार्रवाइयों पर गंभीर चिंता व्यक्त की है। संगठन ने स्पष्ट किया कि इलाज के दौरान हर मृत्यु या प्रतिकूल परिणाम को चिकित्सकीय लापरवाही नहीं माना जा सकता और बिना पर्याप्त आधार के डॉक्टरों पर आपराधिक मामले दर्ज करना स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए खतरनाक संकेत है। IAP की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. नीलम मोहन और महासचिव डॉ. रुचिरा गुप्ता ने संयुक्त बयान में कहा कि हाल के वर्षों में डॉक्टरों और अस्पतालों के खिलाफ आपराधिक शिकायतों और उपभोक्ता मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कई मामलों में बिना ठोस चिकित्सकीय जांच के ही भारतीय दंड संहिता की धारा 304 जैसे गंभीर आरोप लगा दिए जाते हैं, जिससे डॉक्टरों में भय और असुरक्षा का माहौल बनता है। उन्होंने कहा कि डॉक्टरों का काम जीवन बचाना है, लेकिन लगातार कानूनी दबाव उनके आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता को प्रभावित कर सकता है। संगठन ने यह भी बताया कि सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया ने अपने कई ऐतिहासिक निर्णयों में डॉक्टरों की कानूनी सुरक्षा के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए हैं। इन निर्देशों के अनुसार, केवल 'घोर लापरवाही' को ही आपराधिक अपराध माना जा सकता है। किसी डॉक्टर के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने से पहले पुलिस को प्रारंभिक जांच करना अनिवार्य है और विशेषज्ञ चिकित्सा राय लेना आवश्यक है। साथ ही, बिना ठोस कारण के डॉक्टरों की गिरफ्तारी से बचने का भी निर्देश दिया गया है। ये दिशा-निर्देश संविधान के अनुच्छेद 141 के तहत देश की सभी अदालतों और पुलिस एजेंसियों पर बाध्यकारी हैं। IAP ने राजस्थान की स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. अर्चना शर्मा के दुखद मामले का उल्लेख करते हुए कहा कि कानूनी प्रक्रिया का सही पालन न होने के कारण एक समर्पित चिकित्सक को आत्महत्या जैसा कठोर कदम उठाना पड़ा। इस घटना ने पूरे चिकित्सा समुदाय को झकझोर दिया और यह स्पष्ट किया कि डॉक्टरों को उनके कानूनी अधिकारों और सुरक्षा के प्रति जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। संगठन ने पुलिस, डॉक्टरों और मीडिया के लिए भी महत्वपूर्ण सुझाव जारी किए हैं। पुलिस एजेंसियों से अपील की गई है कि वे सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करें और बिना विशेषज्ञ राय के कोई कठोर कदम न उठाएं। डॉक्टरों से कहा गया है कि वे मरीजों और परिजनों के साथ पारदर्शी संवाद बनाए रखें और हर उपचार का उचित दस्तावेजीकरण करें। वहीं, मीडिया से आग्रह किया गया है कि खबरों को सनसनीखेज बनाने से बचें और योग्य चिकित्सकों तथा अवैध चिकित्सा करने वालों के बीच स्पष्ट अंतर करें।

IAP ने जोर देकर कहा कि चिकित्सा क्षेत्र में प्रतिकूल परिणाम हमेशा लापरवाही का प्रमाण नहीं होते। डॉक्टरों को अनुचित मुकदमों से सुरक्षा देना केवल उनके सम्मान और मनोबल की रक्षा के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे समाज को सुरक्षित और प्रभावी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए भी आवश्यक है। संगठन का मानना है कि संतुलित जवाबदेही और कानूनी सुरक्षा के माध्यम से ही एक मजबूत, निर्भीक और विश्वसनीय स्वास्थ्य प्रणाली का निर्माण संभव है।

भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान समान सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के बाद आई पहली महाशिवरात्रि पर सोमनाथ धाम में भक्ति एवं सेवा का अनूठा शुभ संयोग रचा

- **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से हाल ही में मनाए गए सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में देशभर से आए भक्तों-श्रद्धालुओं को सोमनाथ ट्रस्ट ने दिन-रात भंडारा चलाकर भोजन कराया**
- **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मोदी की अध्यक्षता में 'सोमनाथ ट्रस्ट का 'सोमनाथ दादा के दर्शन को आया कोई भक्त भूखा न जाए' ध्येय सोमनाथ स्वाभिमान पर्व उत्सव में नि:शुल्क भोजन प्रसाद सेवा के भंडारे से साकार हुआ**
- **मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में सोमनाथ ट्रस्ट द्वारा गिर-सोमनाथ जिला प्रशासन को भंडारे के राशन के एवज में 1.08 करोड़ रुपए का चेक प्रदान किया गया**

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान समान सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के हाल ही में मनाए गए भव्य उत्सव के बाद की पहली महाशिवरात्रि पर भक्ति एवं सेवा का शुभ संयोग रचा। देश के अस्तित्व तथा गौरव का पर्व और हमारी हजार वर्ष की यात्रा का उत्सव सोमनाथ स्वाभिमान पर्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणादायी उपस्थिति में मनाया गया था। इस पर्व में देशभर से विशाल संख्या में श्रद्धालु तथा भक्त सहभागी हुए थे। इतना ही नहीं; देश के कोने-कोने से विशेष ट्रेनों व बसों द्वारा भी श्रद्धालु सोमनाथ पहुँचे थे।

सोमनाथ आए सभी यात्रियों को रेलवे स्टेशन से लेकर मंदिर तक पहुँचने की सभी व्यवस्थाएँ और भोजन प्रसाद की व्यवस्था सोमनाथ ट्रस्ट द्वारा उदारता के साथ की गई थीं। 1951 में जब सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ, तब नवनिर्मित सोमनाथ मंदिर के समक्ष भक्तों को भोजन प्रसाद परोसने की चुनौती थी। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के साथ सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण को 75 वर्ष भी हुए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चुनौती को अवसर में बदलने की विकसित की गई कार्य संस्कृति सोमनाथ ट्रस्ट ने इस अमृत वर्ष तक शिवभक्तों की दान सेवा तथा जनभागीदारी से चरितार्थ की है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता वाले सोमनाथ ट्रस्ट का 'सोमनाथ दादा के दर्शन को आया कोई भक्त भूखा न जाए' ध्येय भी सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में निःशुल्क भोजन प्रसाद सेवा से साकार हुआ।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अवसर पर सोमनाथ ट्रस्ट ने गिर-सोमनाथ जिला प्रशासन को आश्वासन दिया था कि चाहे जितनी संख्या में भक्त आएंगे, उनकी भोजन व्यवस्था में कोई कमी नहीं रहेगी। देशभर के भक्तों-श्रद्धालुओं को प्रशासन ने दिन-रात भंडारा चलाकर भोजन प्रसाद प्रदान किया और भक्तों की सुविधा के लिए सेवा की धारा बहाई।

इस भंडारे के राशन के एवज में 1.08 करोड़ रुपए का चेक मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर सोमनाथ ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री जे. डी. परमार, सचिव श्री योगेन्द्र देसाई तथा महाप्रबंधक श्री विजयसिंह चावडा ने गिर-सोमनाथ जिला प्रशासन को अर्पित किया।

पश्चिम रेलवे द्वारा विभिन्न ट्रेनों के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। होली के आगामी त्योहारी मौसम के दौरान यात्रियों की सुविधा तथा अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे द्वारा विभिन्न गंतव्यों के बीच चल रही विशेष ट्रेनों के फेरों को विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है :

1. ट्रेन संख्या 09085/09086 मुंबई सेंट्रल – इंदौर त्रि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09085 मुंबई सेंट्रल – इंदौर स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09086 इंदौर – मुंबई सेंट्रल स्पेशल को 28 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
2. ट्रेन संख्या 09001/09002 मुंबई सेंट्रल – भिवानी द्वि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09001 मुंबई सेंट्रल – भिवानी स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09002 भिवानी – मुंबई सेंट्रल स्पेशल को 28 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
3. ट्रेन संख्या 09049/09050 दादर – भुसावल साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09049 दादर – भुसावल स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09050 भुसावल – दादर स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
4. ट्रेन संख्या 09051/09052 दादर – भुसावल त्रि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09051 दादर – भुसावल स्पेशल को 28 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09052 भुसावल – दादर स्पेशल को 28 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
5. ट्रेन संख्या 09005/09006 बांद्रा टर्मिनस – भिवानी साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09005 बांद्रा टर्मिनस – भिवानी स्पेशल को 25 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09006 भिवानी – बांद्रा टर्मिनस स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
6. ट्रेन संख्या 09057/09058 सूरत – मंगलुरु द्वि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09057 सूरत – मंगलुरु स्पेशल को 29 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09058 मंगलुरु – सूरत स्पेशल को 30 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
7. ट्रेन संख्या 09211/09212 गांधीग्राम – बोटाद स्पेशल (दैनिक अनारक्षित)
ट्रेन संख्या 09211 गांधीग्राम – बोटाद स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09212 बोटाद – गांधीग्राम दैनिक स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।
8. ट्रेन संख्या 09530/09529 भावनगर – धोला स्पेशल (दैनिक अनारक्षित)
ट्रेन संख्या 09530 भावनगर – धोला स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09529 धोला – भावनगर स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09085, 09086, 09001, 09049, 09051, 09005 तथा 09057 के विस्तारित फेरों की बुकिंग 17.02.2026 से सभी पीआरएस काउंटरों तथा आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, संरचना एवं समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

वडोदरा मंडल द्वारा ड्रोन आधारित लाइव-लाइन OHE मॉनिटरिंग का सफल परीक्षण

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा हाल ही में प्रतापनगर यार्ड में ड्रोन आधारित लाइव-लाइन ओवरहेड इक्विपमेंट (OHE) मॉनिटरिंग एवं निगरानी प्रणाली का सफल परीक्षण किया गया। वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के कुशल नेतृत्व में कर्षण वितरण विभाग की यह पहल रेलवे संरक्षा और आधारभूत संरचना की विश्वसनीयता को और अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस उन्नत ड्रोन प्रणाली के माध्यम से बिना रेल यातायात को प्रभावित किए OHE का निरीक्षण किया जा सकता है। ड्रोन में उच्च गुणवत्ता वाला थर्मल कैमरा भी स्थापित है, जो ओवरहीटिंग, ढीले संपर्क, संरेखण (एलाइनमेंट) में त्रुटि तथा अन्य संभावित तकनीकी खामियों का सटीक पता लगाने में सक्षम है।

इस पहल के बारे में वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (कर्षण वितरण) श्री नलिन लोचन गुप्ता ने बताया कि इस ड्रोन की माइक्रो संचालन सीमा 5 किलोमीटर है और इसका बैटरी बैकअप लगभग 40 मिनट है। इसमें थर्मल कैमरा सहित लाइव-लाइन मॉनिटरिंग थर्मल इमेजिंग तकनीक के उपयोग से उन दोषों की भी समय रहते पहचान की जा सकेगी, जो सामान्य निरीक्षण में दृष्टिगोचर नहीं होते। इससे OHE पेट्रोलिंग की सटीकता और प्रभावशीलता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

यह पहल पश्चिम रेलवे की उस प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जिसके अंतर्गत आधुनिक तकनीकों को अपनाकर संरक्षा मानकों को और अधिक सुदृढ़ किया जा रहा है। ड्रोन आधारित मॉनिटरिंग प्रणाली के माध्यम से दोष-मुक्त OHE सुनिश्चित करने, मैनुअल निरीक्षण से जुड़े जोखिम को कम करने तथा परिचालन विश्वसनीयता को बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

वडोदरा मंडल सुरक्षित, कुशल एवं आधुनिक रेल संचालन के लिए निरंतर प्रयासरत है।

भावनगर मंडल से होकर चलने वाली भावनगर-धोला और बोटाद-गांधीग्राम स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा हेतु भावनगर मंडल से होकर चलने वाली दो जोड़ी "स्पेशल ट्रेनों" के फेरे विस्तारित किए गए हैं। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार हैः-

1. ट्रेन संख्या 09212/09211 बोटाद-गांधीग्राम-बोटाद दैनिक स्पेशल (अनारक्षित)
ट्रेन संख्या 09211 गांधीग्राम-बोटाद स्पेशल जिसे पहले 28 फरवरी, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, अब उसे 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दिया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09212 बोटाद-गांधीग्राम स्पेशल जिसे पहले 28 फरवरी, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, अब उसे 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दिया गया है।
2. ट्रेन संख्या 09529/09530 धोला-भावनगर-धोला दैनिक स्पेशल (अनारक्षित) ट्रेन संख्या 09529 धोला-भावनगर स्पेशल जिसे पहले 28 फरवरी, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, अब उसे 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दिया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09530 भावनगर-धोला स्पेशल जिसे पहले 28 फरवरी, 2026 तक अधिसूचित किया गया था, अब उसे 31 मार्च, 2026 कत बढ़ा दिया गया है।

सूरत में जलापूर्ति सुधार के लिए बड़ा तकनीकी कार्य: 19 फरवरी को वेसू, अलथान और डुमस सहित कई क्षेत्रों में पानी की सप्लाई रहेगी बंद

(जीएनएस)। सूरत। तेजी से विकसित हो रहे महानगर सूरत में जलापूर्ति व्यवस्था को और अधिक मजबूत, सुरक्षित और दीर्घकालिक रूप से प्रभावी बनाने के उद्देश्य से सूरत नगर निगम द्वारा एक महत्वपूर्ण तकनीकी कार्य किया जा रहा है। इस कार्य के तहत शहर के प्रमुख जल वितरण नेटवर्क की मुख्य राइजिंग लाइन में वाल्व बदलने की प्रक्रिया को अंजाम दिया जाएगा, जिसके कारण 19 फरवरी को शहर के कई प्रमुख और घनी आबादी वाले क्षेत्रों में पानी की सप्लाई अस्थायी रूप से बंद रहेगी। यह कदम भविष्य में जलापूर्ति को अधिक सुचारू और विश्वसनीय बनाने की दिशा में एक आवश्यक और दूरदर्शी पहल माना जा रहा है।

नगर निगम के जल आपूर्ति विभाग द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, यह कार्य सरथाना से खटोदरा तक बिछाई गई मुख्य जल वितरण लाइन में किया जाएगा, जो वेसू, अलथान और डुमस जैसे महत्वपूर्ण जल वितरण स्टेशनों से जुड़ी हुई है। इस मुख्य लाइन में लगे पुराने वाल्व को बदलकर नए और आधुनिक वाल्व लगाए जाएंगे, जिससे जल प्रवाह का नियंत्रण बेहतर होगा और भविष्य में जलापूर्ति में आने वाली तकनीकी समस्याओं को कम किया जा सकेगा। यह कार्य गुरुवार, 19 फरवरी को सुबह 9:00 बजे से शुरू होगा और कार्य पूर्ण होने तक संबंधित क्षेत्रों में जल आपूर्ति बाधित रहेगी।

इस तकनीकी कार्य के कारण संबंधित क्षेत्रों के अंडरग्राउंड जल टैंक निर्धारित समय पर नहीं भरे जा सकेंगे, जिससे वहां के निवासियों को पानी की अस्थायी कमी का सामना करना पड़ेगा। विशेष रूप से अठवा ज़ोन के अंतर्गत आने वाले वेसू, अलथान और डुमस जैसे बड़े और विकसित क्षेत्रों में नलों से पानी की सप्लाई पूरी तरह बंद रहेगी। इन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में आवासीय

सोसायटियां, व्यावसायिक परिसर और संस्थान स्थित हैं, जिससे यह जलापूर्ति बाधित होने का प्रभाव व्यापक स्तर पर महसूस किया जाएगा।

वेसू क्षेत्र, जो सूरत का तेजी से विकसित हो रहा आवासीय और व्यावसायिक केंद्र है, इस जलापूर्ति बाधा से विशेष रूप से प्रभावित रहेगा। इस क्षेत्र के अंतर्गत वेसू गमताल, सोमेश्वर चौकड़ी, सुडा भवन, जी.डी. गोयनका कैनाल रोड, रत्नराज, हेगड़ेवार, रॉयल पैराडाइज, सूर्या हेरिटेज, इको गार्डन, सुमन शैल और सुमन सागर जैसी प्रमुख सोसायटियां और आवासीय क्षेत्र शामिल हैं। इन क्षेत्रों में रहने वाले हजारों परिवारों को इस दौरान पानी के लिए पहले से तैयारी करनी होगी।

इसके अलावा मगदल्ला और रुंढ क्षेत्र भी इस जलापूर्ति बाधा से प्रभावित होंगे। इन क्षेत्रों में हाई-टेक एवेन्यू, एलएंडटी कॉलोनी, ओएनजीसी फेज-II, नंदिनी-1, 2 और 3 जैसी प्रमुख आवासीय कॉलोनियां और सोसायटियां स्थित हैं। इन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में कर्मचारी, परिवार और व्यावसायिक प्रतिष्ठान मौजूद हैं, जिनके लिए पानी की नियमित आपूर्ति अत्यंत आवश्यक होती है।

डुमस और गवियर क्षेत्र, जो सूरत के महत्वपूर्ण तटीय और पर्यटन क्षेत्रों में गिने जाते हैं, वहां भी जलापूर्ति बंद रहेगी। गवियर गांव, डुमस, कादी फलिया, सुल्तानाबाद, भीमपोर गांव, सैटेलाइट बंगला, अवध यूटोपिया और हवाई अड्डा क्षेत्र इस प्रभाव में आएंगे। इन क्षेत्रों में न केवल स्थानीय निवासी रहते हैं, बल्कि यहां पर्यटन गतिविधियां और व्यावसायिक गतिविधियां भी होती हैं, जिससे पानी की आपूर्ति का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। अलथान और भीमराड क्षेत्र, जो सूरत के तेजी से विकसित हो रहे नए आवासीय और औद्योगिक क्षेत्रों में शामिल हैं, वहां भी पानी की सप्लाई प्रभावित रहेगी। टी.पी. 42 और 43 के अंतर्गत भीमराड, ड्रीम सिटी खजोद, भीमराड गांव और सरसाना गांव जैसे क्षेत्र शामिल हैं। इसके अलावा टी.पी. 36 और 37 के अंतर्गत आने वाले सभी क्षेत्र भी इस तकनीकी कार्य के कारण जलापूर्ति बाधा का सामना करेंगे। इन क्षेत्रों में नई आवासीय परियोजनाएं, स्कूल, अस्पताल और व्यावसायिक प्रतिष्ठान तेजी से विकसित हो रहे हैं, जिससे जल आपूर्ति का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

सूरत में उबाल: आरोपी चिराग गोटी के रिकंस्ट्रक्शन के दौरान फूटा जनाक्रोश, भीड़ ने घेरा, पुलिस ने संभाली स्थिति

(जीएनएस)। सूरत। शहर में हाल ही में सामने आए चर्चित आपराधिक मामले के आरोपी चिराग गोटी को जब पुलिस केस के रिकंस्ट्रक्शन के लिए घटनास्थल पर लेकर पहुंची, तो वहां का माहौल अचानक तनावपूर्ण और उग्र हो गया। बड़ी संख्या में स्थानीय लोग पहले से ही घटनास्थल के आसपास जमा थे और जैसे ही आरोपी पुलिस की निगरानी में वहां पहुंचा, लोगों का आक्रोश फूट पड़ा। देखते ही देखते भीड़ ने आरोपी के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी और माहौल पूरी तरह से उत्तेजित हो गया। यह घटना केवल एक पुलिस प्रक्रिया तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह लोगों के भीतर जमा गुस्से और असंतोष का विस्फोट बनकर सामने आई। आरोपी पर अपने ही साथी की कार में ड्रग्स रखने, अपहरण, रंगदारी और मारपीट जैसे गंभीर आरोप हैं। इन आरोपों ने समाज में गहरी चिंता और आक्रोश पैदा कर दिया है,

जिसके कारण जब आरोपी को सार्वजनिक रूप से घटनास्थल पर लाया गया, तो लोगों ने अपने गुस्से को खुलकर व्यक्त किया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, जैसे ही पुलिस आरोपी को लेकर घटनास्थल पर पहुंची, वहां मौजूद लोगों ने जोरदार विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। कई लोग आरोपी के खिलाफ सख्त सजा की मांग कर रहे थे, जबकि कुछ लोग इतने आक्रोशित थे कि उन्होंने आरोपी के करीब पहुंचकर धक्का-मुक्की करने की कोशिश की। स्थिति उस समय और अधिक गंभीर हो गई, जब कुछ लोगों ने आरोपी को थप्पड़ मारने का प्रयास किया। हालांकि पुलिस ने तत्परता और सतर्कता दिखाते हुए तुरंत हस्तक्षेप किया और आरोपी को भीड़ से सुरक्षित निकालकर वाहन तक पहुंचाया।

इस पूरे घटनाक्रम के दौरान पुलिस के सामने सबसे बड़ी चुनौती भीड़ को नियंत्रित करना और कानून-व्यवस्था बनाए रखना था। पुलिस बल की मौजूदगी के बावजूद भीड़ का आक्रोश इतना अधिक था कि स्थिति को संभालने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। कई पुलिसकर्मी आरोपी के चारों ओर घेरा बनाकर खड़े रहे, ताकि उसे किसी प्रकार की शारीरिक क्षति न पहुंचे। पुलिस की प्राथमिक जिम्मेदारी आरोपी की सुरक्षा सुनिश्चित करना भी होती है, क्योंकि कानून के अनुसार हर आरोपी को निष्पक्ष जांच और न्यायिक प्रक्रिया का अधिकार प्राप्त है।

रिकंस्ट्रक्शन की प्रक्रिया किसी भी आपराधिक जांच का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है। इस प्रक्रिया के दौरान पुलिस आरोपी को घटनास्थल पर ले जाकर यह समझने की कोशिश करती है कि अपराध किस प्रकार और किन परिस्थितियों में हुआ था। इससे जांच एजेंसियों को घटना के क्रम को स्पष्ट रूप से समझने में मदद मिलती है और अदालत में ठोस साक्ष्य प्रस्तुत करने में सुविधा होती है। लेकिन इस मामले में रिकंस्ट्रक्शन की प्रक्रिया ने एक अप्रत्याशित मोड़ ले लिया, जब यह सार्वजनिक विरोध का केंद्र बन गई।

आस्था की अविरल धारा : श्याम पैलेस परिवार की भव्य निशान यात्रा और भजन संध्या में उमड़ा श्रद्धा का सागर

(जीएनएस)। सूरत। जब भक्ति हृदय में जागती है, तो वह केवल एक भावना नहीं रहती, बल्कि एक ऐसा अनुभव बन जाती है जो आत्मा को परम शांति और आनंद से भर देता है। सूरत शहर में रविवार, 15 फरवरी 2026 को श्याम पैलेस परिवार द्वारा आयोजित भव्य निशान यात्रा और भजन संध्या इसी दिव्य अनुभूति का सजीव उदाहरण बनी। इस आयोजन ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया, जहां हर ओर "बाबा श्याम" के जयकारे गूंज रहे थे और श्रद्धालु भक्ति की धारा में सराबोर होकर अपने आराध्य के प्रति अपनी अटूट आस्था प्रकट कर रहे थे। सुबह की पहली किरण के साथ ही श्याम पैलेस परिसर में भक्तों का जमावड़ा शुरू हो गया था। श्रद्धालु अपने हाथों में पवित्र निशान लेकर और मन में बाबा श्याम के प्रति अटूट विश्वास लेकर यात्रा में शामिल होने के लिए उत्साहित नजर आ रहे थे। ठीक सुबह 7 बजे

विधिवत पूजा-अर्चना के बाद निशान यात्रा का शुभारंभ हुआ। जैसे ही यात्रा आगे बढ़ी, पूरा वातावरण "हारे का सहारा, बाबा श्याम हमारा" और "जय श्री श्याम" के जयकारों से गूंज उठा। श्रद्धालु ढोल-नगाड़ों की धुन पर नृत्य करते हुए, भजन गाते हुए और बाबा के नाम का गुणगान करते हुए आगे बढ़ रहे थे। निशान यात्रा केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं होती, बल्कि यह भक्त और भगवान के बीच प्रेम, विश्वास और समर्पण का प्रतीक होती है। श्रद्धालु जब अपने कंधों पर निशान लेकर चलते हैं, तो वह केवल एक ध्वज नहीं होता, बल्कि वह उनके विश्वास, उनकी आस्था और उनकी प्रार्थनाओं का प्रतीक होता है। इस यात्रा में शामिल हर भक्त के चेहरे पर खुशी, शांति और आत्मिक संतोष स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

यात्रा शहर के प्रमुख मार्गों से होती हुई श्याम मंदिर पहुंची, जहां श्रद्धालुओं ने पूरे विधि-विधान के साथ बाबा श्याम को निशान अर्पित किए। मंदिर परिसर में पहुंचते ही भक्तों ने हाथ जोड़कर अपने आराध्य को प्रणाम किया और उनके चरणों में अपनी श्रद्धा अर्पित की। उस क्षण का दृश्य अत्यंत भावुक और दिव्य था, जब सैकड़ों श्रद्धालु एक साथ अपने भगवान के सामने नतमस्तक होकर आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे।

इस आयोजन का दूसरा और अत्यंत महत्वपूर्ण भाग शाम को आयोजित भजन संध्या था, जिसने पूरे वातावरण को भक्ति रस से सराबोर कर दिया। शाम 7 बजे से शुरू हुई भजन संध्या में प्रसिद्ध भजन गायक अजीत दाधीच ने अपनी मधुर और भावपूर्ण प्रस्तुतियों से सभी श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने एक से बढ़कर एक भजन प्रस्तुत किए, जिनमें बाबा श्याम की महिमा, उनकी कृपा और उनके भक्तों के प्रति उनके प्रेम का सुंदर वर्णन किया गया।

जैसे-जैसे भजन आगे बढ़ते गए, श्रद्धालु भक्ति के सागर में डूबते चले गए। कई श्रद्धालु भावविभोर होकर नृत्य करने लगे, तो कई अपनी आंखें बंद करके बाबा के ध्यान में लीन हो गए। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्वयं बाबा श्याम वहां उपस्थित होकर अपने भक्तों को आशीर्वाद दे रहे हों।

सोना वायदा गिरकर 1.54 लाख रुपये और चांदी वायदा लुढ़ककर 2.35 लाख रुपये तक पहुँचा: क्रूड ऑयल वायदा में 8 रुपये की नरमी

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 177866.46 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 18323.08 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 159542.02 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 38010 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2304.55 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 13912.42 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा 154999 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 155550 रुपये और नीचे में 154125 रुपये पर पहुंचकर, 155895 रुपये के पिछले बंद के सामने 558 रुपये या 0.36 फीसदी औंधकर 155337 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 370 रुपये या 0.29 फीसदी की गिरावट के साथ 126524 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 21 रुपये या 0.13 फीसदी की गिरावट के साथ 15877 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोना-मिनी मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 153200 रुपये के भाव पर खूलकर, 153680 रुपये के दिन के उच्च और 152092 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 400 रुपये या 0.26 फीसदी की गिरावट के साथ 153471 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 154561 रुपये के भाव पर खूलकर, 155900 रुपये के दिन के उच्च और 154401 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 156122 रुपये के पिछले बंद के सामने 472 रुपये या 0.3 फीसदी की गिरावट के साथ 155650 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 238489 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 241452 रुपये और नीचे में 235208 रुपये पर पहुंचकर, 244360 रुपये के पिछले बंद के सामने 3760 रुपये या 1.54 फीसदी घटकर 240600 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 5114 रुपये या 2.05 फीसदी गिरकर 244466 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 5235 रुपये या 2.1

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 18323.08 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 159542.02 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 13912.42 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 38010 पॉइंट के स्तर पर

फीसदी लुढ़ककर 244350 रुपये प्रति किलो बोला गया।

मेटल वर्ग में 2420.51 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 8.4 रुपये या 0.69 फीसदी घटकर 1201.1 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 1.7 रुपये या 0.53 फीसदी गिरकर 321.9 रुपये प्रति किलो हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 45 पैसे या 0.15 फीसदी की नरमी के साथ 308.8 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 70 पैसे या 0.37 फीसदी के सुधार के साथ 188.2 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1897.75 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 5705 रुपये के भाव पर खूलकर, 5724 रुपये के दिन के उच्च और 5669 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 8 रुपये या 0.14 फीसदी की गिरावट के साथ 5715 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 6 रुपये या 0.1 फीसदी औंधकर 5716 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 282.4 रुपये के भाव पर खूलकर, 282.4 रुपये के दिन के उच्च और 269.8 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 294.1 रुपये के पिछले बंद के सामने 22.4 रुपये या 7.62 फीसदी की गिरावट के साथ 271.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 22.5 रुपये या 7.65 फीसदी घटकर 271.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा 968 रुपये पर खूलकर, 80 पैसे या 0.08 फीसदी टूटकर 965.6 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 7118.10 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 6794.31 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1979.26 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 162.10 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 30.03 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 239.17 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 624.08 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1256.20 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 1.40 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 8912 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 62543 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 32394 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 430514 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 58526 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 8303 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 19309 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 64523 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 19605 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 24732 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 37700 पॉइंट पर खूलकर, 38122 के उच्च और 37101 के नीचले स्तर को छूकर, 65 पॉइंट घटकर 38010 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल फरवरी 5700 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 15.3 रुपये की गिरावट के साथ 82.7 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 15.1 रुपये की गिरावट के साथ 13.55 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 170000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 183 रुपये की गिरावट के साथ 491 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 240000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2795 रुपये की गिरावट के साथ 12340.5 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 5.73 रुपये की गिरावट के साथ 23.53 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 12 पैसे की नरमी के साथ 0.65 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल फरवरी 5700 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 11 रुपये की गिरावट के साथ 66.7 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 6.35 रुपये की बढ़त के साथ 11.5 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 50 पैसे के सुधार के साथ 659 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 197.5 रुपये की गिरावट के साथ 1905.5 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1100 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2.51 रुपये की बढ़त के साथ 5.86 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 53 पैसे की नरमी के साथ 3.4 रुपये हुआ।

गुजरात को मिली नई सौगात: असारवा उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस का शुभारंभ

(जीएनएस)। भारतीय रेल द्वारा गुजरात में आधुनिक रेल सेवाओं के विस्तार की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 16 फरवरी 2026 को असारवा–उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस सेवा का शुभारंभ किया गया। यह सेवा राज्य में तेज, सुरक्षित एवं विश्वस्तरीय रेल यात्रा के नए आयाम स्थापित करेगी।

हिम्मतनगर स्टेशन पर माननीया सांसद श्रीमती शोभनाबेन बारैया, माननीय सांसद श्री मयंक नायक,माननीया सांसद श्रीमती रमीलाबेन बारा एवं माननीय पूर्व सांसद श्री दीपसिंह राठोड द्वारा उदयपुर–असारवा वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

इसी क्रम में असारवा स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में माननीया महापौर, अहमदाबाद श्रीमती प्रतिभाबेन जैन, माननीय सांसद, श्री दिनेशभाई मकवाना तथा माननीय सांसद (राज्यसभा) श्री नरहरि अमीन द्वारा उदयपुर सिटी-असारवा वंदे भारत एक्सप्रेस का स्वागत किया गया।

इस अवसर पर माननीय सांसद श्री दिनेशभाई मकवाना ने अपने संबोधन में कहा कि भारत सरकार और भारतीय रेल गुजरात में ट्रेन सेवाओं और रेलवे अवसंरचना को उन्नत करने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध हैं। वर्तमान में गुजरात में

1,28,748 करोड़ के रेलवे कार्य प्रगति पर हैं और इस वर्ष के बजट में राज्य को रिकॉर्ड 17,366 करोड़ का आवंटन प्राप्त हुआ है। गुजरात के 87 स्टेशनों का पुनर्विकास विश्व-स्तरीय रेलवे स्टेशनों के रूप में किया जा रहा है, जिनमें से 19 स्टेशनों का उद्घाटन हो चुका है। यह दर्शाता है कि गुजरात देश के रेलवे आधुनिकीकरण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

इस अवसर पर माननीय सांसद श्री नरहरि अमीन ने बताया कि गुजरात से बहुत से लोग शादी के लिए सामूहिक रूप से उदयपुर जाते है उनके के लिए यह ट्रेन वरदान स्वरूप है जो 4 से 4.15 घंटे में असारवा से उदयपुर पहुंचाती है। यह ट्रेन अत्याधुनिक एवं सड़क मार्ग की अपेक्षा ज्यादा सुरक्षित व आरामदायक है।

यह गुजरात की छठी वंदे भारत ट्रेन है, जो क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को सुदृढ़ करने के साथ-साथ यात्री सुविधा, पर्यटन और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देगी। भारतीय रेल अपग्रेड किए गए स्टेशनों, नई रेल लाइनों एवं अत्याधुनिक सुविधाओं के माध्यम से क्षेत्रीय विकास और बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है। असारवा–उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस इसी प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण है।

यह अत्याधुनिक ट्रेन रिक्लाइनिंग एवं आरामदायक सीटों, स्लाइडिंग दरवाजों, मोबाइल चार्जिंग पॉइंट, बायो-टॉयलेट, स्वचालित प्रवेश एवं निकास द्वार तथा सीसीटीवी कैमरों जैसी आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है। यह ट्रेन यात्रियों को तेज, सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा के साथ विश्वस्तरीय आराम का अनुभव प्रदान करेगी।

ट्रेन संचालन विवरण:

ट्रेन संख्या 26964/26963 असारवा–उदयपुर सिटी–असारवा वंदे भारत एक्सप्रेस

ट्रेन संख्या 26964 असारवा–उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस 18 फरवरी 2026 से प्रतिदिन (मंगलवार को छोड़कर) असारवा से 17:45 बजे प्रस्थान कर 22:00 बजे उदयपुर सिटी पहुंचेगी।

ट्रेन संख्या 26963 उदयपुर सिटी–असारवा वंदे भारत एक्सप्रेस 18 फरवरी 2026 से प्रतिदिन (मंगलवार को छोड़कर) उदयपुर सिटी से 06:10 बजे प्रस्थान कर 10:25 बजे असारवा पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन हिम्मतनगर, डूंगरपुर एवं जावर स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में एसी चेयर कार एवं एक्जीक्यूटिव चेयर कार सहित कुल 8 कोच रहेंगे।

ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

अप्रैल-जनवरी 2025-26 में निर्यात 6.15 प्रतिशत बढ़ा; ईयू और अमेरिका के साथ एफटीए से नई तेज़ी मिलेगी: फियो अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन

(जीएनएस)। नई दिल्ली, 16 फरवरी, 2026: फेडरेशन ऑफ़ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइज़ेशन्स (फियो) ने अप्रैल-जनवरी 2025-26 के दौरान भारत के निर्यात में अच्छी बढ़ोतरी का स्वागत किया है, जो लगातार ग्लोबल अनिश्चितताओं के बीच देश के बाहरी ट्रेड सेक्टर की मज़बूती और लगातार रफ़्तार को दिखाता है। इस दौरान भारत का कुल निर्यात 6.15 प्रतिशत बढ़कर 720.76 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि पिछले वित्तीय वर्ष की इसी अवधि में यह 679.02 बिलियन डॉलर था। वस्तु निर्यात 366.63 बिलियन डॉलर रहा, जो अप्रैल-जनवरी 2024-25 में दर्ज 358.75 बिलियन डॉलर से 2.20 प्रतिशत ज़्यादा है। खास बात यह है कि अकेले जनवरी 2026 में निर्यात काफी बढ़कर 80.45 बिलियन डॉलर हो गया, जो पिछले साल जनवरी में 71.09 बिलियन डॉलर था। यह बाहरी डिमांड में अच्छी रिकवरी और ग्लोबल ट्रेड सेंटिमेंट में सुधार को दिखाता है।

फियो अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन ने कहा कि अप्रैल-जनवरी 2025-26 के दौरान कुल निर्यात में 6.15 प्रतिशत की बढ़ोतरी भारतीय इंडस्ट्री की अंदरूनी ताकत और कॉम्पिटिटिवनेस का एक पॉजिटिव और भरोसा दिलाने वाला इंडिकेटर है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि यूरोपियन यूनियन और अमेरिका के साथ एफटीए का सफल होना भारत के बदलते ट्रेड आर्किटेक्चर में एक बड़ा बदलाव लाने वाला मील का पत्थर है। चूंकि अमेरिका भारत का टॉप निर्यात गंतव्य बना हुआ है और यूरोप एक बड़ा हाई-वैल्यू मार्केट बना हुआ है, इसलिए इन एग्रीमेंट से भारतीय निर्यात को बेहतर मार्केट एक्सेस, बेहतर टैरिफ कॉम्पिटिटिवनेस और ज़्यादा रेगुलेटरी प्रेडिक्टेबिलिटी मिलने की उम्मीद है। समय पर लागू करने और इंडस्ट्री की प्रोएक्टिव तैयारी के साथ, ये एफटीए आने वाले सालों में भारत के निर्यात ग्रोथ ट्रैजेक्टरी को काफी तेज़ करने के लिए तैयार हैं। श्री रल्हन ने आगे कहा कि इंजीनियरिंग गुड्स, फार्मास्यूटिकल्स, टेक्सटाइल और गारमेंट्स, लेदर, जेम्स और ज्वेलरी, एग्रीकल्चर और मरीन प्रोडक्ट्स जैसे खास सेक्टर्स को इन ट्रेड एग्रीमेंट्स से काफी फायदा होने की उम्मीद है। मौजूदा वित्तीय वर्ष में इंजीनियरिंग गुड्स, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स, टेक्सटाइल, जेम्स और ज्वेलरी और एग्रीकल्चर जैसे सेक्टर्स का लगातार परफॉर्मेंस भारत के निर्यात बास्केट के डायवर्सिफिकेशन और ग्लोबल वैल्यू चेन्स में देश के गहरे एकीकरण को दिखाता है। इम्पोर्ट के मामले में, अप्रैल-जनवरी 2025-26 के दौरान कुल आयात 6.54 प्रतिशत बढ़कर 823.41 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि पिछले साल इसी समय में यह 772.85 बिलियन डॉलर था। वस्तु आयात 7.21 प्रतिशत बढ़कर 649.86 बिलियन डॉलर हो गया, जो अप्रैल-जनवरी 2024-25 में 606.13 बिलियन डॉलर था। जनवरी 2026 में आयात 90.83 बिलियन डॉलर था, जिससे महीने के लिए 10.45 बिलियन डॉलर का व्यापार घाटा हुआ। इस ट्रेंड पर कमेंट करते हुए, श्री रल्हन ने कहा कि आयात में बढ़ोतरी, खासकर पेट्रोलियम, इलेक्ट्रॉनिक सामान, मशीनरी और इंडस्ट्रियल रॉ मटीरियल के आयात में बढ़ोतरी, मज़बूत घरेलू डिमांड और सभी सेक्टर में चल रही कैपेसिटी बढ़ाने को दिखाती है। जनवरी में व्यापार घाटा 10.45 बिलियन डॉलर था, लेकिन उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि लगातार निर्यात ग्रोथ और मज़बूत होती इकोनॉमिक फंडामेंटल्स को देखते हुए ओवरऑल ट्रेंड मैनेजेबल बना हुआ है।

अप्रैल-जनवरी 2025-26 के दौरान निर्यात में मुख्य योगदान देने वालों में इंजीनियरिंग सामान, पेट्रोलियम प्रोडक्ट, इलेक्ट्रॉनिक सामान, ड्रग्स और फार्मास्यूटिकल्स, जेम्स और ज्वेलरी, ऑर्गेनिक और इनऑर्गेनिक केमिकल, सभी तरह के टेक्सटाइल के रेडीमेड गारमेंट, कॉटन यार्न और फैब्रिक, हैंडलूम प्रोडक्ट, चावल और मरीन प्रोडक्ट शामिल थे। भारत के मुख्य निर्यात गंतव्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, चीन, नीदरलैंड्स, ब्रिटेन, जर्मनी, सिंगापुर, बांग्लादेश, सऊदी अरब और इटली बने रहे, जबकि मुख्य इम्पोर्ट सोर्स में चीन, संयुक्त अरब अमीरात, रूस, अमेरिका, सऊदी अरब, इराक, स्विट्जरलैंड, हांगकांग, सिंगापुर और जापान शामिल थे।

फियो ने भरोसा जताया कि लगातार पॉलिसी सपोर्ट, नए एफटीए के तहत बेहतर मार्केट एक्सेस और इंडस्ट्री की लगातार मज़बूती के साथ, भारत अपने निर्यात ग्रोथ मोमेंटम को बनाए रखने और ग्लोबल ट्रेड में एक भरोसेमंद और कॉम्पिटिटिव पार्टनर के तौर पर अपनी भूमिका को और मज़बूत करने के लिए अच्छी स्थिति में है।